Approach – Answer: General Studies Mains Mock Test 1497 (2021)

1. Trace the evolution of Pahari paintings along with their prominent features. (150 words) 10
पहाड़ी चित्रकला के विकास का उसकी प्रमुख विशेषताओं के साथ अन्वेषण कीजिए।

दृष्टिकोण:

- पहाड़ी चित्रकला का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
- पहाड़ी चित्रकला के विकास का उल्लेख करते हुए उसकी प्रत्येक शैली की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

पहाड़ी चित्रकला 17वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य हिमालय के उत्तर-पश्चिमी तराई क्षेत्रों में विकसित एक लघु चित्रकला शैली है। हालांकि इस कला की उत्पत्ति के संबंध में निश्चितता का अभाव है, लेकिन इसकी विभिन्न शैलियों को लघु चित्रकला की **मुगल शैली** और **राजस्थानी शैली** से प्रभावित माना जाता है। देवी और देवताओं का चित्रण पहाड़ी शैली की सबसे सामान्य विशेषताओं में से एक है। इस चित्रकला में प्रायः हिमालय की प्राकृतिक सुंदरता को चित्रित किया गया था।

विकास और विशिष्ट विशेषताएं:

औरंगज़ेब के शासनकाल के दौरान चित्रकारों को प्राप्त मुग़ल संरक्षण में कमी आई। इसलिए ये चित्रकार हिमालय के तराई क्षेत्रों में विस्तृत पड़ोसी राज्यों में चले गए। उन्हें राजपूत राजाओं का संरक्षण प्राप्त हुआ और पहाड़ी चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ विकसित हुईं, जैसे:

- **बसोहली या बशोली चित्रकला:** यह पहाड़ी चित्रकला की सबसे आरंभिक शैली है, जिसका उद्भव 17वीं शताब्दी के अंत में हुआ। प्राथमिक रंगों और चमकीले पीतवर्ण का अत्यधिक उपयोग इसकी मुख्य विशेषता है जिसका उपयोग पृष्ठभूमि और क्षितिज को रंगने और वनस्पतियों को अलंकृत रूप से प्रकट करने में किया गया है। आभूषणों में मोती के अनुकरण को प्रदर्शित करने के लिए सफेद रंग का उपयोग किया गया है।
- **गुलेर शैली: लगभग** 1730-1740ई. में गुलेर नामक एक नवीन शैली का उद्भव हुआ। इसे पूर्व-कांगड़ा या गुलेर-कांगड़ा कलम शैली भी कहा जाता है। इस शैली में भारतीय महिलाओं की सुंदरता और सांस्कृतिक शिष्टता पर बल दिया गया है। इस शैली में सामान्यतः प्राकृतिक भू परिदृश्यों का विषयवस्तु के रूप में उपयोग किया गया है। इस अवधि के दौरान चित्रकार इस कला से संबंधित प्रयोग और परिवर्धन करने में संलग्न रहे जिसके परिणामस्वरूप अंततः कांगड़ा शैली का उद्भव हुआ।
- **कांगड़ा शैली:** राजा संसार चंद (1775-1823) के शासन के दौरान चित्रकला की कांगड़ा क्षेत्र का अत्यधिक विकास हुआ। भारतीय शैलियों में कांगड़ा शैली अब तक की **सबसे गीतात्मक और काव्यात्मक शैली** है जिसके निष्पादन में निर्मल सुंदरता और सूक्ष्मता का प्रयोग किया गया है। कांगड़ा शैली की विशिष्ट विशेषताएं आरेखण संबंधी मृदुलता, रंग का उत्कृष्ट उपयोग और सजावटी विवरणों संबंधी सूक्ष्मता आदि हैं। इसमें महिलाओं के चेहरे के आरेखण में नाक लगभग माथे के सीध में होती है। यह विधा लगभग 1790 के दशक में प्रचलित हुई थी जो इस शैली की **सबसे विशिष्ट विशेषता है**।
- **कुल्लू शैली:** कुल्लू शैली, बसोहली से उद्भूत एक विशिष्ट शैली है। इस शैली के चित्रों में उभरी हुई ठोड़ी और बड़ी आँखों के साथ पृष्ठभूमि में धुमैला और टेराकोटा लाल रंगों का भव्य उपयोग किया गया है।
- **नूरपुर चित्रकला:** हालाँकि बसोहली शैली स्वतः विकसित होकर कांगड़ा शैली के रूप में परिपक्व हुई तथापि, नूरपुर के चित्रकारों ने बसोहली के जीवंत रंगों को कांगड़ा के उत्कृष्ट चित्रों में बरकरार रखा। नूरपुर चित्रकला में सामान्यतः चमकीले रंगों और सपाट पृष्ठभूमि का उपयोग किया गया है।

इस प्रकार, बसोहली में उत्पन्न, पहाड़ी शैली का धीरे-धीरे अन्य पहाड़ी राज्यों मनकोट, नूरपुर, कुल्लू, मंडी, बिलासपुर, चंबा, गुलेर और कांगड़ा में विस्तार हुआ।

2. ***On the vast panorama of world literature, Kalidasa is considered as a literary genius, second to none. Discuss in the context of writings of Kalidasa. (150 words) 10***

विश्व साहित्य के विशाल दृश्यपटल पर, कालिदास को एक अद्वितीय साहित्यिक प्रतिभा माना जाता है। कालिदास की रचनाओं के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

दृष्टिकोण:

- कालिदास और उनके कार्यों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
- कालिदास की कृतियों में उन विशिष्ट विशेषताओं पर चर्चा कीजिए, जो उन्हें एक महान साहित्यिक प्रतिभा के रूप में स्थापित करती है।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

गुप्त काल के दौरान कालिदास संस्कृत भाषा के एक महान भारतीय कवि थे। गुप्त काल को सामान्यतः भारत का स्वर्ण युग माना जाता है। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में **अभिज्ञानशाकुंतलम्, विक्रमोर्वशीयम्,** और **मालविकाग्निमित्रम् नामक तीन नाटक; रघुवंशम् व कुमारसंभवम् नामक दो महाकाव्य** और **मेघदूतम् और ऋतुसंहार नामक दो खंडकाव्य** शामिल हैं। उन्हें एक अद्वितीय साहित्यिक प्रतिभा के रूप में माना जाता है क्योंकि:

- उनके नाटकों से रचनाकार की **उत्कृष्ट कल्पना-शक्ति और रचनात्मक कल्पना** प्रदर्शित होती है। यह मौलिक रूप से भारतीय थे तथा इन्होंने वियोग में होने वाले प्रेम एवं वेदना और पुनर्मिलन में होने वाली खुशी जैसे सार्वभौमिक तत्वों को प्रस्तुत करती है जो मानव जीवन के सारभूत तत्व हैं।
- उनकी रचनाओं में किसी विशेष देवी या देवता की अवधारणा पर आधारित **तत्कालीन विशिष्ट विचारधारा वाली भावात्मक कट्टरता** से परे का दर्शन शामिल है। यद्यपि मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् और अभिज्ञानशाकुंतलम् के आरंभिक छंदों से उनके शैव होने के संकेत मिलते हैं फिर भी उनके द्वारा रघुवंशम् में भगवान विष्णु और **कुमारसंभवम्** में ब्रह्मा को समान सम्मान प्रदान किया गया है।
- उनकी रचनाओं में **प्राचीन ब्राह्मणवादी धार्मिक परंपराओं के समेकन के साथ-साथ नवीन परंपराओं के समेकन की आवश्यकता को भी दर्शाया गया है।** यह समेकन गुप्त काल के पुनर्जागरण का एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है। कालिदास का मानवतावाद उनकी रचनाओं को धर्मनिरपेक्ष स्वरूप प्रदान करता है।
- अपनी रचनाओं में **'उपमा'** का प्रयोग कालिदास का एक विशिष्ट गुण है। उनकी रचनाओं में **विचारोत्तेजक शैली** अपनी अभिव्यक्ति की तुलना से कहीं अधिक विचारों को प्रस्तुत करती है। यह शैली अपनी उत्तरवर्ती रचनाओं में प्रयुक्त कृत्रिमता और अतिव्यापी विवरणों से रहित है।
- मानवीय भावनाओं और प्रकृति की सुंदरता को **रूपक की अत्यधिक सटीक उत्कृष्टता** के साथ दर्शाया गया है। यह अभिलाक्षणिक विशेषता संभवतः विश्व के किसी भी ग्रंथ में प्रयुक्त नहीं की गई है।
- कालिदास उच्च कोटि के ज्ञानी थे। सम्राट रघु की विजय का चित्रण करते हुए **कालिदास ने अपने महाकाव्य रघुवंशम्** में लगभग संपूर्ण देश के स्थानों, व्यापारों, व्यवसायों, नदियों और पहाड़ों का वर्णन किया है। इसके लिए संभवतः उन्होंने देश के विस्तृत क्षेत्रों की यात्राएं, विभिन्न स्थानों का दर्शन, वहां के निवासियों से वार्ताएं और उनके रहन-सहन के तरीकों का अध्ययन किया गया होगा।
- **उनकी कविता मेघदूत में** मध्य भारत में राम गिरी से लेकर हिमालय में अलका नगरी तक का अत्यधिक सुंदर वर्णन किया गया है।

यही कारण है कि न केवल कालिदास के भारतीय उत्तरवर्ती विद्वानों जैसे बाणभट्ट ने, बल्कि गेटे जैसे अंतर्राष्ट्रीय कवियों ने भी उनकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। उनकी रचनओं ने रवींद्रनाथ टैगोर जैसे भारतीय और सर विलियम जोन्स जैसे विदेशी विद्वानों को प्रभावित किया, जिन्होंने सर्वप्रथम कालिदास की रचनाओं का अनुवाद किया और उन्हें भारत के शेक्सपियर की संज्ञा प्रदान की।

3. ***Tracing the evolution of Shaivism in India, discuss the various philosophical schools associated with it. (150 words) 10***

भारत में शैवमत के विकास का अन्वेषण करते हुए, इससे संबंधित विभिन्न दार्शनिक संप्रदायों की विवेचना कीजिए।

दृष्टिकोण:

- शैवमत और उसके उद्भव के संबंध में एक संक्षिप्त वर्णन करते हुए उत्तर आरंभ कीजिए।
- शैवमत के विकास पर चर्चा कीजिए।
- शैवमत से संबद्ध विभिन्न दार्शनिक परंपराओं पर चर्चा कीजिए।
- संक्षिप्त निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

शैवमत भारत में न केवल सर्वाधिक प्राचीन और प्रागैतिहासिक धर्म है, बल्कि बहुसंख्यकों द्वारा अनुकरण किया जाने वाला एक प्रचलित धर्म भी है। शैव मत के उद्भव (पूर्व-वैदिक, वैदिक या देशज द्रविड़ परंपरा के दौरान) के संबंध में मतभेद है।

भारत में शैवमत का विकास

- **वैदिक काल** के गौण देवताओं में से एक **रुद्र** को शिव के साथ संबद्ध किया जाता है। इसके अतिरिक्त, शिव का वर्णन **यजुर्वेद** में किया गया है, जहां उनके लिए पशुपति, नीलग्रीव आदि नाम प्रयुक्त किए गए हैं।
- **महाकाव्यों और पुराणों** में शिव द्वारा अत्याचारी एवं दुष्ट लोगों जैसे असुर आदि का संहार करने के बारे में कई लघु कथाएं विद्यमान हैं। इसलिए उन्हें संहार करने वाले ईश्वर के रूप में माना गया है।
- **गुप्त काल** में शिव की उपासना का व्यापक महत्व था। लेकिन शैवमत के भक्ति आंदोलन संबंधी साक्ष्य केवल दक्षिण भारत से प्राप्त हुए हैं। यहां यह अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गया था।
- दक्षिण भारत में प्राचीन **संगम साहित्य** से प्राप्त शिव का संदर्भ तमिल लोगों के मध्य उनकी वीरता और लोकप्रियता का साक्षी है। तमिल भक्ति साहित्य में शिव द्वारा निष्पादित चौसठ दिव्य कलाओं का उचित रूप से वर्णन किया गया है।

शैव मत के दार्शनिक संप्रदाय

पाशुपत या कपालिक:

- पाशुपत उत्तर भारत का प्राचीनतम शैव संप्रदाय है जो शैव एकेश्वरवाद पर बल देता है। उनके लिए शिव पूर्ण स्वतंत्र हैं और विश्व के लिए महत्वपूर्ण कारक हैं। उनके योग संबंधी अभ्यास में एकांत में शिव के साथ सतत ध्यान संपर्क स्थापित करना करना शामिल होता है।
- कापालिक अधिक चरम समूह हैं, जो मानते हैं कि किसी भी सांसारिक वस्तु के प्रति उदासीनता स्वयं को संसार से मुक्त करने का सबसे उत्तम माध्यम है।

कश्मीरी या त्रिक शैववाद:

- यह 9वीं शताब्दी में कश्मीर में विकसित शैववाद का एक अद्वैत रूप है।
- इसके अनुसार शिव निरपेक्ष सत्य है और शेष संपूर्ण जगत इनसे उत्पन्न हुआ है।
- इसकी तंत्रवाद में गहरी आस्था हैं और यह विश्व के त्याग में विश्वास नहीं करता है, बल्कि इसकी पुष्टि करता है।
- यह मुक्ति के लिए ज्ञान के महत्व पर बल देता है।

वीर शैव या लिंगायत

- इसका विकास कर्नाटक के उत्तर-पश्चिमी भागों में मुख्यतः 12वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ।
- यह संप्रदाय शिव को सर्वोच्च मानता है।
- ये सैद्धांतिक रूप से सभी जाति भेदों को त्याग देते हैं और महिलाओं को पुरुषों के समान दर्जा प्रदान करते हैं।
- लिंग को अग्नि और प्रकाश के संकेंद्रण के रूप में माना जाता है जो व्यक्ति के शरीर और मन को शुद्ध करता है।

शैव सिद्धांत

- यह तमिल शैव संप्रदाय में विकसित आस्तिक दर्शन है।
- यह घोषित करता है कि पदार्थ और आत्माएं ईश्वर की भांति अनंत एवं नित्य हैं।
- निरपेक्ष पुरुष अपनी कृपा के माध्यम से आत्माओं को सदैव पदार्थ के बंधन और तीन अपयश जो उनकी पवित्रता को अशुद्ध करती है, से संरक्षण में संलग्न है।
- ईश्वर आत्मा या ब्रह्मांड के समरूप नहीं है। वह उनका पदार्थ नहीं है, लेकिन ये परस्पर (ईश्वर आत्मा एवं ब्रह्मांड में और आत्मा एवं ब्रह्मांड ईश्वर में) समाहित हैं।

शैववाद की प्रकृति शास्त्रीय रूढ़िवादी प्रणालियों से कुछ भिन्न थी। शास्त्रीय रूढ़िवादी प्रणालियां शुद्ध, अमूर्त और काल्पनिक दार्शनिक चर्चाओं पर अत्यधिक केंद्रित थी। शैववाद में दार्शनिक चिंतन के साथ व्यावहारिक जीवन के एक विशिष्ट सम्मिश्रण पर बल दिया गया था।

4. ***The approach and vision of Netaji Subhash Chandra Bose towards the Indian freedom struggle differed in key aspects from the one adopted by the Congress mainstream. Discuss. (150 words) 10***
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रति नेताजी सुभाष चंद्र बोस का दृष्टिकोण और दूरदर्शिता कांग्रेस की मुख्यधारा द्वारा अपनाए गए प्रमुख पहलुओं में भिन्न था। चर्चा कीजिए।

दृष्टिकोण:

- नेताजी सुभाष चंद्र बोस के बारे में संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रति नेताजी का दृष्टिकोण और दूरदर्शिता कांग्रेस की मुख्यधारा के विभिन्न पहलुओं में भिन्नता दर्शाने के लिए तर्क प्रस्तुत कीजिए।
- उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सबसे प्रमुख नेताओं में से एक थे। ये वर्ष 1937 तथा 1938 में दो बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए थे, फिर भी उनके दृष्टिकोण और दूरदर्शिता कांग्रेस के कई नेताओं से भिन्न थे, जिसे निम्नलिखित रूप में वर्णित किया जा सकता है:

- **अतिवादी दृष्टिकोण**: उन्होंने कांग्रेस के अधिक आक्रामक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व किया, जो **पूर्ण स्वतंत्रता** की मांग करता था और वर्ष 1928 की नेहरू रिपोर्ट में की गई डोमिनियन स्टेट्स की मांग से संतुष्ट नहीं था।
- **क्रांतिकारी समूहों को समर्थन:** वह भूमिगत **क्रांतिकारी समूह** नामतः बंगाल वालंटियर से संबद्ध थे और हिंसक गतिविधियों में अपनी संदिग्ध भूमिका के लिए गिरफ्तार किए गए थे।
  - उन्होंने **"तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूंगा"**, का नारा दिया। इसका स्पष्ट अर्थ है कि उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए जीवन का बलिदान देने का आह्वान किया और यह आह्वान **'अहिंसा'** एवं **'सत्याग्रह'** पर निर्भर नहीं था।
- **सामरिक गठबंधनों का निर्माण**: वह ब्रिटेन के शत्रुओं के साथ सहयोग करने और स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु **युद्ध का मार्ग** अपनाने के लिए तैयार थे। इसके विपरीत, महात्मा गाँधी नाजी जर्मनी और फासीवादी इटली की विचारधारा के विरोधी होने के कारण इस स्थिति का लाभ नहीं उठाना चाहते थे।
- **आर्थिक नियोजन**
  - बोस महात्मा गाँधी के रूढ़िवादी अर्थशास्त्र के आलोचक और **औद्योगीकरण की नीति** के समर्थक थे। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) के अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए, वर्ष 1938 में **राष्ट्रीय योजना समिति (National Planning Committee)** का गठन किया।
  - हालांकि बोस ने कृषि क्षेत्रक की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति का समर्थन किया, लेकिन उन्होंने व्यापक पैमाने पर औद्योगिक क्रांति को निर्धनता और बेरोज़गारी की समस्याओं के एकमात्र समाधान के रूप में देखा। इसलिए, उन्होंने योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था के सोवियत मॉडल का समर्थन किया।
- **भारत में कांग्रेस की भूमिका:** बोस भारत में कांग्रेस पार्टी द्वारा "रूस में कम्युनिस्ट पार्टी, जर्मनी में नाज़ी पार्टी, इटली में फ़ासीवादी पार्टी और तुर्की में कमाल की पार्टी (Kemal's Party)" के अनुरूप भूमिका के निर्वहन के पक्षधर थे। हालाँकि कांग्रेस की मुख्य धारा के नेताओं ने इन विचारधाराओं का समर्थन नहीं किया।

अतः, नेताजी स्वतंत्रता के प्रति महात्मा गांधी के कम टकराव वाले दृष्टिकोण(less confrontational approach) के आलोचक थे और परिणामस्वरूप उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस(INC) से इस्तीफ़ा दे दिया। इसके पश्चात् उन्होंने अतिवादी तत्वों के साथ सहयोग की अपेक्षा के साथ **फॉरवर्ड ब्लॉक** की स्थापना की। इस उद्देश्य के लिए, वर्ष 1941 में वह नाजी शासित जर्मनी गए और अंग्रेजों के विरुद्ध उनकी सहायता प्राप्त करने का प्रयास किया। जर्मनी से ये जापान चले गए और यहां उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करने हेतु एक मुक्ति बल (liberation force) के रूप में **आजाद हिन्द फ़ौज (Indian National Army: INA)** की स्थापना की। उन्होंने सिंगापुर में अस्थायी भारतीय सरकार की भी स्थापना की। इस प्रकार, नेताजी एक ऐसे राष्ट्रभक्त थे, जिन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन के लिए तत्कालीन सर्वाधिक प्रचलित उपायों की तुलना में एक अलग मार्ग अपनाया।

5. ***Despite various shortcomings, the Moderate phase of freedom struggle was key in giving birth to economic nationalism in India. Comment.*** ***(150 words) 10***

विभिन्न कमियों के बावजूद, स्वतंत्रता संग्राम का नरमपंथी चरण भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद को जन्म देने में महत्वपूर्ण था। टिप्पणी कीजिए।

दृष्टिकोण:

- भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के नरमपंथी चरण पर एक संक्षिप्त टिप्पणी के साथ परिचय दीजिए।
- नरमपंथी नेतृत्व की सीमाओं का विवरण दीजिए।
- वर्णन कीजिए कि उन्होंने किस प्रकार भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद को उत्पन्न किया तथा इसका क्या प्रभाव पड़ा।
- संक्षिप्त निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

अपने इतिहास के **प्रथम बीस वर्षों (1885-1905)** के दौरान कांग्रेस की राजनीति को सामान्यतः नरमपंथी चरण के रूप में संदर्भित किया जाता है। आरंभिक राष्ट्रवादियों या नरमपंथियों को ब्रिटिश सरकार में आस्था थी और उन्होंने चरमपंथी राष्ट्रवादियों **के विपरीत** विरोध-प्रदर्शन, प्रार्थना और याचिका का मार्ग अपनाया। चरमपंथी राष्ट्रवादियों का उदय वर्ष 1892 के पश्चात हुआ। साथ ही चरमपंथी ब्रिटिश वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार और आंदोलन को बंगाल से बाहर भी प्रसारित करना चाहते थे। स्वतंत्रता संग्राम के नरमपंथी चरण में विभिन्न कमियाँ व्याप्त थीं जैसे:

- **संकीर्ण सामाजिक आधार:** जनता द्वारा इस चरण में निष्क्रिय भूमिका निभाई गयी तथा केवल शिक्षित अभिजात वर्ग ने ही इसमें भागीदारी की।
- **सीमित स्व-शासन की मांग**: ये ब्रिटिश न्याय प्रणाली के संदर्भ में आशावादी थे। इसलिए उनका उद्देश्य ब्रिटिश ढांचे के अंतर्गत सीमित स्व-शासन प्राप्त करना था। इन्होंने विदेशी शासन से पूर्ण स्वतंत्रता की प्रभावी मांग नहीं की।
- **पाश्चात्य विचार**: उनके अधिकांश विचार जैसे समानता, स्वतंत्रता, लोकतंत्र आदि पाश्चात्य राजनीतिक विचारों पर आधारित थे और प्रारंभिक तौर पर जनता को आकर्षित करने में विफल रहे।

हालांकि, उदारवादी नेताओं जैसे दादाभाई नौरोजी, रोमेश चंद्र दत्त, गोपाल कृष्ण गोखले एवं अन्य ने भारत में ब्रिटिश शासन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करके **भारत में आर्थिक राष्ट्रवाद** को जन्म दिया। उन्होंने निम्नलिखित तरीकों से ब्रिटिश शासन के वास्तविक चरित्र को उजागर किया:

- **धन की निकासी**: इन्होंने किसी भी आर्थिक और वाणिज्यिक लाभ के बिना संसाधनों के भारत से ब्रिटेन में **एकतरफा हस्तांतरण** के रूप में धन की निकासी के विचार को प्रतिपादित किया। उदारवादी नेताओं, विशेष रूप से दादाभाई नौरोजी ने, **ब्रिटिश शासन द्वारा भारत के शोषण की व्याख्या करने हेतु "धन निकासी का सिद्धांत (drain theory)"** प्रस्तुत किया।
  - उन्होंने **होम चार्जेज (गृह व्यय), मिलिट्री चार्जेज (सैन्य व्यय) और रेलवे निवेश पर गारंटीकृत ब्याज भुगतान** के कारण होने वाली भारतीय धन की प्रत्यक्ष निकासी को उजागर किया।
- **कृषि**: वर्ष 1888 से 1903 तक, INC ने प्रत्येक वर्ष 'भू राजस्व मांग' पर प्रस्ताव पारित किया। उन्होंने 'भू-राजस्व मांग' को कम करने के लिए सरकार से निरंतर अपील की तथा यह उजागर किया कि किस प्रकार सरकार की नीतियाँ कृषि से पूँजी की निकासी हेतु उत्तरदायी थीं और भूमि में निवेश को प्रतिबंधित कर रही थी। इन नीतियों ने कृषक आबादी की निर्धनता और निरंतर अकाल की समस्या को प्रेरित किया।
- **उद्योगों का अल्प विकसित होना**: उन्होंने **भारत** (जो कभी एक विनिर्माणकर्ता देश था तथा संपूर्ण एशिया और यूरोप में अपनी वस्तुओं का निर्यात करता था) **के वि-औद्योगीकरण** को रेखांकित किया। उन्होंने व्याख्या की कि किस प्रकार ब्रिटिश शासन की प्रतिकूल प्रशुल्क (टैरिफ) नीतियों ने भारत को कच्चे माल के आपूर्तिकर्ता और तैयार वस्तुओं के आयातक देश के रूप में प्रतिस्थापित कर दिया है।
- **भारतीय लोगों की निर्धनता**: वर्ष 1886 में, ब्रिटिश शासन के 100 वर्षों के पश्चात भी भारत में भुखमरी को रेखांकित करने के लिए कांग्रेस ने संकल्प प्रस्तुत किया। **निर्धनता की समस्या** को प्रत्येक उपलब्ध मंच पर चर्चा के लिए और भारतीय समाज में सभी वर्गों की एकता के लिए **एक आम राष्ट्रीय मुद्दा** बनाया गया।

इस प्रकार के विश्लेषणों, आलोचनाओं और मांगों के माध्यम से नरमपंथी एक अखिल भारतीय सार्वजनिक राय के निर्माण में सक्षम हुए कि भारत में ब्रिटिश शासन भारत की निर्धनता और आर्थिक पिछड़ेपन का प्रमुख कारण है।

6. ***The huge strides India took towards modernisation under Lord Dalhousie were borne out of necessity rather their benevolence. Examine.*** ***(150 words) 10***

लॉर्ड डलहौजी के कार्यकाल के अंतर्गत आधुनिकीकरण की दिशा में भारत ने जो अत्यधिक प्रगति की थी, वह परोपकार के बजाय आवश्यकता से अधिक प्रेरित थी। परीक्षण कीजिए।

दृष्टिकोण :

- भारत के आधुनिकीकरण के लिए लॉर्ड डलहौजी द्वारा उठाए गए कदमों का उल्लेख कीजिए और उन कदमों के अनभिप्रेत लाभों को संक्षेप में रेखांकित कीजिए।
- व्याख्या कीजिए कि ये किस प्रकार भारतीय हितों की कीमत पर अंग्रेजों के हित के पोषक थे।
- संक्षिप्त निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

लॉर्ड डलहौजी वर्ष **1848 से 1856 तक भारत के गवर्नर-जनरल के पद पर रहा**। उसने कई सुधार प्रारंभ किए, जिन्होंने **भारत के आधुनिकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया**, जैसे:

- **रेलवे सुधार**: इसके कार्यकाल में वर्ष 1853 में बॉम्बे को थाणे से जोड़ने वाली प्रथम रेलवे लाइन बिछाई गई। इस लाइन के माध्यम से व्यापार और वाणिज्य को सुविधाजनक बनाने के अतिरिक्त, संपूर्ण भारत में यात्रा की दूरी को कवर करने में लगने वाले समय में कमी हुई, जिससे देश के एकीकरण में सहायता प्राप्त हुई।
- **तार प्रणाली**: वर्ष 1852 में डलहौजी ने भारत में विद्युत् तार प्रणाली (Electric Telegraph System) की शुरुआत की। वर्ष 1854 में कलकत्ता से आगरा तक 800 मील की दूरी को कवर करते हुए प्रथम तार (टेलीग्राफ) लाइन आरंभ की गई थी। वर्ष 1857 तक इसे लाहौर और पेशावर तक विस्तारित कर दिया गया था।
- **डाक सुधार**: वर्ष 1854 में एक नया डाकघर अधिनियम पारित किया गया। कुछ समय पश्चात्, संपूर्ण देश के लिए एक डाक विभाग की स्थापना की गई तथा लोग आधुनिक डाक प्रणाली से लाभान्वित हुए।
- **लोक निर्माण विभाग**: सड़क, पुल और सरकारी भवनों के निर्माण के लिए लॉर्ड डलहौजी द्वारा एक पृथक लोक निर्माण विभाग की स्थापना की गई थी।
- **सामाजिक सुधार**: डलहौजी ने कन्या भ्रूण हत्या और मानव बलि प्रथा को समाप्त कर दिया और साथ ही वुड्स डिस्पैच के माध्यम से देशी भाषा में शिक्षा को भी बढ़ावा दिया।

हालांकि, यह तर्क दिया जाता है कि आधुनिकीकरण की दिशा में उसके सुधार ब्रिटिश हितों के लिए भारत के दोहन की आवश्यकता के कारण किए गए थे जैसे-

- **रेलवे में सुधार**: उसने बंदरगाहों को साधन-संपन्न आंतरिक क्षेत्रों से जोड़ने हेतु रेलवे के एक नेटवर्क की परिकल्पना की थी। इस प्रकार इससे **रणनीतिक आवश्यकताओं और वाणिज्यिक विकास** दोनों की प्राप्ति हुई। उदाहरण के लिए, भारतीय संसाधनों का दोहन करने के लिए कलकत्ता से रानीगंज कोयला-क्षेत्रों तक एक रेलवे लाइन का निर्माण किया गया था।
- **डाक और तार (टेलीग्राफ) सुधार**: डाक और तार से संबंधित सुधार अंग्रेजों द्वारा भारत के विभिन्न प्रांतों और क्षेत्रों में हो रही घटनाओं के संबंध में सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए आवश्यक थे। वर्ष **1857 के विद्रोह को दबाने में** अंग्रेजों द्वारा इनका भलीभांति उपयोग किया गया।
- **प्रशासनिक सुधार**: डलहौजी का मुख्य उद्देश्य **भारत में ब्रिटिश शासन को सुदृढ़ करना** था। इसके लिए उसने **प्रशासनिक केंद्रीकरण** के सिद्धांत को अपनाया। उदाहरण के लिए, उसने न्यायिक, पुलिस और भूमि राजस्व से संबंधित अन्य सभी अधिकार जिलाधिकारियों को सौंप दिए।
- **सैन्य सुधार:** उसे **भारतीयों पर भरोसा नहीं था, अतः उसने एक नई गोरखा रेजिमेंट गठित की**। एक नए "अनियमित सैन्य बल" का भी गठन किया तथा इसे पंजाब में तैनात किया। ये रेजिमेंट वर्ष 1857-58 के विद्रोह के दौरान अंग्रेजों के लिए अत्यधिक सहायक सिद्ध हुईं।
- **सामाजिक सुधार:** डलहौजी ने वर्ष 1850 में **धार्मिक निर्योग्यता अधिनियम (Religious Disability Act)** पारित किया, जिसने हिंदुओं को अपना धर्म परिवर्तन करने पर अपनी पैतृक संपत्ति को प्राप्त करने का अधिकार प्रदान किया। इससे **धर्मान्तरण गतिविधियों को बढ़ावा मिला।**

- **वाणिज्यिक सुधार**: डलहौज़ी ने **मुक्त व्यापार की नीति** का अनुसरण किया, उदाहरण के लिए - भारत के सभी बंदरगाह व्यापार हेतु मुक्त घोषित कर दिए गए। **इसे अंग्रेजी पूँजी के बेहतर प्रयोग हेतु भारत की उपज और बाजार को खोलने के लिए डिज़ाइन किया गया था।** डलहौज़ी के वाणिज्यिक सुधारों ने भारतीय व्यापार को विकृत कर दिया तथा भारतीयों की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई।

इस प्रकार, डलहौजी द्वारा किए गए सुधार **मुख्य रूप से भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को सुदृढ़ करने** के लिए किए गए थे, हालांकि भारतीय भी इनसे अप्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित हुए। वह एक साम्राज्यवादी अधिकारी था, जिसने भारत में कई उद्देश्यों को प्राप्त किया किंतु उसका प्राथमिक प्रयोजन भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की सुरक्षा और उसे सुदृढ़ करना था।

7. Indian women, cutting across identities, increasingly participated in the anti-colonial and democratic movements since 1930s. Discuss. (150 words) 10

भारतीय महिलाओं ने पहचान से ऊपर उठकर, 1930 के दशक से उपनिवेशवाद-विरोधी और लोकतांत्रिक आंदोलनों में बढ़चढ़ कर भाग लिया। चर्चा कीजिए।

दृष्टिकोण:

- 1930 के दशक से पहले महिलाओं की स्थिति पर एक संक्षिप्त टिप्पणी के साथ परिचय दीजिए।
- उन तरीकों का वर्णन कीजिए जिनके माध्यम से 1930 के दशक से विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है।
- उदाहरण के माध्यम से उत्तर की पुष्टि कीजिए।
- उचित निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास का वर्णन महिलाओं के योगदान का स्मरण किए बिना नहीं किया जा सकता है। महात्मा गांधी ने महिलाओं के निस्वार्थ बलिदान की क्षमता को पहचाना और जन आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी की प्रवृत्ति निर्धारित की। महिलाओं की शिक्षा संबंधी समस्याओं को उठाने के लिए मार्गरेट बंधुओं की पहल पर वर्ष 1927 में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की स्थापना की गई। इसमें संपूर्ण भारत और धार्मिक समूहों की महिलाओं ने भाग लिया, हालांकि यह भागीदारी मुख्यतः संभ्रांत वर्ग की महिलाओं द्वारा की गई थी। शीघ्र ही वर्ष 1928 के बारदोली सत्याग्रह के दौरान राजनीतिक समारोहों में महिलाओं की संख्या पुरुषों की संख्या से अधिक हो गई। 1930 के दशक तक, जनांदोलनों में मजदूर वर्ग और किसान वर्ग की महिलाएँ भी शामिल होने लगी। यह प्रवृत्ति जारी रही जिसे निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है:

- महात्मा गांधी ने **सविनय अवज्ञा आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए विशेष रूप से महिलाओं से** आग्रह किया। उन्हें शराब की दुकानों, अफीम के अड्डों और विदेशी कपड़ा बेचने वाली दुकानों के बाहर धरना देते हुए देखा जाना एक चिरपरिचित दृश्य बन गया था।
  - मई 1930 में, गांधीजी ने धरसाना साल्ट वर्क्स पर छापा मारने के लिए विशेष रूप से **सरोजिनी नायडू** को नामित किया।
  - आंदोलन के दौरान, **कमला देवी** ने बैठकों को संबोधित किया, नमक बनाया और विदेशी कपड़ों एवं शराब की दुकानों के बाहर धरना दिया।
  - **रानी गैडिनलियु** ने अंग्रेजों के विरुद्ध नागा आंदोलन का नेतृत्व किया और सविनय अवज्ञा आंदोलन का समर्थन किया।
  - वर्ष 1930 में, **दुर्गाबाई देशमुख** ने मद्रास प्रेसीडेंसी में नमक सत्याग्रह का आयोजन किया। उन्होंने वर्ष 1941 में, महिलाओं के कल्याण के लिए आंध्र महिला सभा की भी स्थापना की।
- बंगाल में कुछ महिलाओं ने **उग्र क्रांतिकारी आंदोलन** में भाग लिया। स्वदेशी आंदोलन के विपरीत, महिलाएं यहाँ केवल सहायक भूमिकाओं में नहीं थी। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों को आश्रय दिया, संदेशों का आदान-प्रदान किया और संघर्ष में सशस्त्र भाग लिया।
  - महिला क्रांतिकारियों के प्रसिद्ध समूह में **बीना दास, कल्पना दत्ता और प्रीतिलता वड्डेदार** शामिल थीं।
- 1940 के दशक में, विभिन्न वर्गों और धर्मों की महिलाओं ने सार्वजनिक जीवन में अपने लिए सक्रिय भूमिका की मांग करना और स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लेना प्रारंभ कर दिया।
  - **उषा मेहता** ने भारत छोड़ो आंदोलन की सूचना एवं गतिविधियों को प्रसारित करने के लिए "वॉइस ऑफ़ फ्रीडम" नामक एक रेडियो ट्रांसमीटर स्थापित किया।

- वर्ष 1943 में, सुभाष चंद्र बोस ने एक महिला रेजिमेंट - **रानी लक्ष्मी बाई रेजीमेंट** - को आजाद हिंद फौज में शामिल करने का निर्णय लिया। इस रेजिमेंट में दक्षिण पूर्व एशिया में रहने वाले सभी धर्मों और जातियों के कुलीन एवं कामगार भारतीय परिवारों से लगभग 1500 महिलाएं शामिल हुई।
- 1940 के दशक में, पाकिस्तान आंदोलन ने राजनीतिक क्षेत्र में मुस्लिम महिलाओं के लिए एक नवीन अवसर प्रदान किया। इससे पूर्व भी वर्ष 1938 में मुस्लिम लीग ने मुस्लिम महिलाओं को शामिल करने के लिए एक महिला उप-समिति का गठन किया था।

इस प्रकार, 1930 के दशक से भारत के सभी वर्गों की महिलाओं ने उपनिवेशवाद-विरोधी और लोकतांत्रिक आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई।

8. Bring out the differences in the views of Babasaheb Ambedkar and Mahatma Gandhi on the question of upliftment of dalits. (150 words) 10

दलितों के उत्थान के प्रश्न पर बाबा साहेब अंबेडकर और महात्मा गांधी के विचारों में अंतर स्पष्ट कीजिए।

दृष्टिकोण:

- भारतीय समाज और जाति के प्रति महात्मा गांधी और अंबेडकर के दृष्टिकोण का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।
- दलितों के उत्थान के प्रश्न पर उनके विचारों में भिन्नता पर चर्चा कीजिए।
- संतुलित निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

महात्मा गांधी और डॉ. अंबेडकर दोनों ने अपने समकालीन समाज के मूल पुर्वमान्यताओं पर प्रश्नचिह्न आरोपित करते हुए इनमें सुधार की मांग की और भारतीय समाज में विद्यमान विभिन्न बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष किया। यद्यपि दोनों नेता विद्रोही और समाज सुधारक थे, फिर भी **दलितों के उत्थान के प्रश्न के संबंध में उनके सिद्धांतों एवं विचारधाराओं में व्यापक मतभेद था।**

उनके मतभेदों का एक कारण यह था कि डॉ. अंबेडकर की जाति के प्रति समझ हिंसा और भेदभाव के उनके अनुभवों पर आधारित थी, जबकि महात्मा गांधी का जाति से संबंधित ज्ञान एक **अमूर्त अवधारणा** थी। **इसके आधार पर, उनके बीच निम्नलिखित कुछ प्रमुख मतभेद थे**:

- **प्रचलित जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता के प्रति दृष्टिकोण:** डॉ. अंबेडकर ने **जाति व्यवस्था को अस्पृश्यता को धर्मशास्त्रीय और व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने वाली व्यवस्था** के रूप में देखा अर्थात् उनके अनुसार अस्पृश्यता का प्रचलन आरोपित जाति व्यवस्था का एक उपोत्पाद था। साथ ही उन्होंने **'जाति का विनाश' (annihilation of caste)** का विचार प्रतिपादित किया। इसके विपरीत, महात्मा गांधी ने कई आधारों पर **जाति व्यवस्था का समर्थन किया** और माना कि वर्ण व्यवस्था में विकृति के कारण अस्पृश्यता की अवधारणा उत्पन्न हुई है। इसलिए, क्रमिक रुप से, उनका ध्यान अंतर-जातीय मतभेदों से संबंधी चिंताओं के निवारण के बजाय अस्पृश्यता के उन्मूलन पर केंद्रित रहा।
- **जाति के आयाम:** डॉ. अंबेडकर ने कहा कि जाति भेद सामाजिक आयामों के साथ-साथ आर्थिक और राजनीतिक आयामों को समाहित करता है। उन्होंने **बौद्धिक और राजनीतिक रूप से, जाति के विश्लेषण और इसके उन्मूलन को अपनी प्रमुख चिंता माना** जबकि महात्मा गांधी ने जाति के प्रश्न पर विश्लेषणात्मक रूप से विचार नहीं किया और न ही इसमें राजनीतिक रूप से शामिल हुए।
- **फोकस क्षेत्र:** डॉ. अंबेडकर ने पूरी तरह से **दलित वर्गों का प्रतिनिधित्व करने पर ध्यान केंद्रित** किया गया। इनके राजनीति दृष्टिकोण के मुख्य उद्देश्यों में दलित वर्गों के हित सर्वोपरि थे। हालाँकि, महात्मा गांधी **का मुख्य फोकस राजनीतिक संघर्ष और हिंदू-मुस्लिम एकता पर रहा।**
- **सांप्रदायिक पंचाट के संबंध में असहमति:** डॉ. अंबेडकर दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल के पक्ष में थे, जबकि महात्मा गांधी इसके सख्त विरुद्ध थे। महात्मा गांधी ने बल देकर कहा कि दलितों को शेष हिंदू पंथों से पृथक नहीं किया जाना चाहिए। अंततः, उन्होंने **'पूना पैक्ट'** के रूप में एक समझौते पर सहमति व्यक्त की, जिसमें दलितों के लिए सामान्य निर्वाचन क्षेत्रों में से सीटें आरक्षित की गई थीं।
- **दृष्टिकोण**: महात्मा गांधी ने **नैतिक और धार्मिक अपील** के माध्यम से अस्पृश्यता के संबंध में सवर्ण हिंदुओं के विचारों में परिवर्तन की मांग की। हालांकि, डॉ. अंबेडकर का मानना था कि **हिंदू जाति के आत्मज्ञान की प्रतीक्षा करना अनुचित** है और उन्होंने दलितों के हितों की रक्षा के लिए **राजनीतिक और कानूनी दृष्टिकोण** पर बल दिया।

इसलिए, दोनों के बीच मुख्य अंतर यह था कि महात्मा गांधी **सामाजिक असमानता के बावजूद राजनीतिक एकता की व्यवहार्यता** और समाज के सामाजिक और राजनीतिक रूप से एकजुटता के लिए एक साथ प्रयासों में विश्वास करते थे। जबकि, डॉ. अंबेडकर का मत था कि, सामाजिक और धार्मिक आधार पर प्रचलित विभाजन ने **राजनीतिक क्षेत्र में एकता की कल्पना या दावा करने की संभावना को असंभव बना दिया है**। हालांकि, मतभेदों के बावजूद, सामूहिक मुक्ति उन दोनों का उभय-निष्ठ लक्ष्य था।

9. North-East India threw up constant challenges to the British hegemony in India. Discuss in the context of anti-colonial struggles in the region. (150 words) 10

पूर्वोत्तर भारत ने भारत में ब्रिटिश आधिपत्य के प्रति निरंतर चुनौतियां उत्पन्न कीं। इस क्षेत्र में उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्षों के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

दृष्टिकोण:

- पूर्वोत्तर क्षेत्र में ब्रिटिश आगमन का एक संक्षिप्त विवरण देते हुए परिचय दीजिए।
- उदाहरण देते हुए उल्लेख कीजिए कि भारत में उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्षों ने समय-समय पर ब्रिटिश आधिपत्य को कैसे चुनौती दी।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र में अंग्रेजी शासन का प्रारंभ वर्ष 1826 में असम के अधिग्रहण के साथ (बर्मा द्वारा इस क्षेत्र पर कब्ज़ा करने के लगभग एक दशक पश्चात्) हुआ। अंग्रेजों ने इस क्षेत्र के आर्थिक संसाधनों का दोहन करने के लिए एक एकीकृत राजनीतिक और प्रशासनिक संरचना के निर्माण का प्रयास किया। हालांकि, उन्हें इस क्षेत्र की विभिन्न जनजातियों द्वारा निरंतर उत्पन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

इस क्षेत्र के कुछ प्रमुख उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष निम्नलिखित हैं:

- **अहोम विद्रोह:** अंग्रेजों ने प्रथम बर्मा युद्ध (1824-26) के पश्चात् असम से वापस लौटने का आश्वासन दिया था। लेकिन युद्ध के पश्चात् वापस लौटने के बजाय अंग्रेजों ने अहोम के क्षेत्रों को कंपनी के प्रभुत्व में शामिल करने का प्रयास किया। इसके कारण वर्ष 1828 में गोमधर कुंवर के नेतृत्व में एक विद्रोह प्रारंभ हो गया। अंत में, कंपनी ने एक सहमति नीति का पालन करने का निर्णय किया और अपर असम को महाराजा पुरंदर सिंह नरेंद्र को सौंप दिया और साम्राज्य के अधिग्रहित भाग पर असमिया राजा के शासन को बहाल कर दिया गया।
- **खासी विद्रोह:** बाहरी लोगों को क्षेत्र से बाहर निकालने के लिए तीरथ सिंह के नेतृत्व में खासी, गारो, खाम्पटी और सिंहपो लोगों द्वारा संगठित होकर विद्रोह किया गया। यह विद्रोह संबंधित क्षेत्र में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक जन विद्रोह के रूप में विकसित हुआ, जिसे बाद में वर्ष 1833 में अधिक शक्तिशाली अंग्रेजी सैन्य बल द्वारा दबा दिया गया।
- **सिंहपो विद्रोह:** जब अंग्रेज खासी विद्रोह के दमन हेतु प्रयासरत थे तब वर्ष 1830 के प्रारंभ में निरांग फिडू के नेतृत्व में सिंहपो लोगों ने विद्रोह किया।
- **कूकी विद्रोह:** यह वास्तव में कुकी लोगों द्वारा 1917 में साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता और मुक्ति के लिए किया गया एक युद्ध था।
- **जेलियांग्रांग आंदोलन:** यह 1920 और 1930 के दशक के दौरान पूर्वोत्तर भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध एक आंदोलन था। असहयोग आंदोलन (NCM) से समकालीनता ने इस आंदोलन को गति प्रदान की। कालांतर में आंदोलन के नेता, जदोनांग, की मृत्यु के बाद - जेलियांग्रांग आंदोलन सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन में परिवर्तित हो गया।
- **रानी गैडिनलियु का नागा आंदोलन:** रानी गैडिनलियु ने सर्वप्रथम महात्मा गांधी के नाम का प्रयोग किया तथा उत्पीड़न के विरुद्ध और आत्मनिर्णय के लिए अपने लोगों के संघर्ष को भारत में उभर रहे राष्ट्रीय आंदोलन के साथ पहचान की।
- **त्रिपुरा विद्रोह:** रत्नमणि के नेतृत्व में रियांग जनजाति ने वर्ष 1942-1943 में त्रिपुरा के दक्षिणी अनुमंडल में एक सशस्त्र विद्रोह किया और स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
- **अन्य विद्रोह:** इसमें 1861 में असम में फूलागुरी का कृषक विद्रोह, जयंतिया पहाड़ी की सिंटेंग जनजाति का विद्रोह आदि शामिल थे।

इन विद्रोहों को बाहरी लोगों द्वारा किए जा रहे उत्पीड़न, स्थानीय लोगों की ऐतिहासिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रणालियों में हस्तक्षेप और अन्य विशिष्ट कारणों जैसे प्रतिज्ञाओं आदि के उल्लंघन से प्रोत्साहन प्राप्त हुआ था। यद्यपि इन विद्रोहों का उद्देश्य भिन्न था लेकिन इसने लोगों को यह अनुभव करने में सहायता की कि वे सभी एक ही शत्रु यथा अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्षरत हैं अर्थात इन सभी का शत्रु एक ही है और स्वयं को अंग्रेजों के उत्पीड़न से मुक्त करने के लिए इन्हें देश से बाहर निकालने की आवश्यकता है।

10. Give an account of developments in India and across the world that influenced the Indian Trade Union Movement. (150 words) 10

भारत और विश्व भर में घटित होने वाले उन घटनाक्रमों का विवरण दीजिए जिन्होंने भारतीय मजदूर संघ आंदोलन को प्रभावित किया।

दृष्टिकोण:

- भारत में मजदूर संघ आंदोलनों के आरंभिक इतिहास पर चर्चा कीजिए।
- भारत और विश्व भर में घटित होने वाले उन घटनाक्रमों का विवरण दीजिए जिन्होंने भारतीय मजदूर संघ आंदोलन को प्रभावित किया।
- संक्षेप में निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

भारतीय मजदूर वर्ग के मध्य उभरती राजनीतिक चेतना का सर्वप्रथम प्रसार 20वीं सदी के आरंभिक दशकों में हुआ। राजनीतिक प्रेरणाओं और विचारधाराओं ने भारतीय मजदूर संघ आंदोलन को अत्यधिक प्रभावित किया और साथ ही ये विचारधाराएं भी आंदोलन की बढ़ती हुई शक्ति से प्रभावित हुईं।

भारतीय मजदूर संघ आंदोलन के दो पक्षों अर्थात् मजदूर वर्ग के संगठन एवं वैचारिक अनुकरण को भारत और विश्व भर में घटित घटनाक्रमों द्वारा प्रभावित किया गया जैसे:

- प्रथम विश्व युद्ध के उपरांत, रूस में **अक्टूबर क्रांति** और **कॉमिन्टर्न** का गठन विश्व भर के श्रमिकों को सर्वहारा क्रांति के लिए एकजुट होने के लिए खुला आह्वान था। उसी समय, **लीग ऑफ नेशंस में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (I.L.O)** का गठन किया गया जिससे श्रमिकों की समस्या को अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त हुआ।
- इसी अवधि के दौरान भारतीय राजनीतिक मंच पर **महात्मा गांधी का अभ्युदय** हुआ। साथ ही राष्ट्रवादी आंदोलन के **आधार का विस्तार करने और कार्यकर्ताओं को संगठित करने** हेतु भी व्यापक स्तर पर प्रयास किए गए।
- वर्ष 1920 में नागपुर अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक संकल्प पारित किया 'कि वह भारत के श्रमिकों से पूर्णत: सहानुभूति रखती है साथ ही मजदूर संघों के माध्यम से उनके वैध अधिकारों को प्राप्त करने के संघर्ष में उनके साथ है'।
- राष्ट्रवादी नेताओं द्वारा सक्रिय रूप से राष्ट्रीय स्तर पर मजदूर संघ गठित करने का प्रयास किया जा रहा था, जिसकी परिणिति वर्ष **1920 में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC)** के गठन के रूप में हुई। **राष्ट्रवादी नेताओं** जैसे वी.वी. गिरि, सी. आर. दास, जवाहर लाल नेहरू, सरोजनी नायडू, एस.सी. बोस ने मज़दूर संघ के साथ **घनिष्ठ संबंध बनाए रखने के साथ साथ** इसके वार्षिक अधिवेशनों की **अध्यक्षता भी की**।
- प्रारंभ में, यह ब्रिटिश श्रमिक दल के सामाजिक लोकतांत्रिक विचारों से प्रभावित था। भारत में इसका नियंत्रण काफी हद तक **नरमपंथियों (मॉडरेट)** के अधीन रहा और **गांधीवादी दर्शन** ने भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 1920 के दशक में **साम्यवादी आंदोलन** के उदय ने भारतीय मजदूर संघ आंदोलन को एक उग्रवादी दृष्टिकोण प्रदान किया। **कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की चौथी कांग्रेस** ने मजदूर संघ आंदोलन को पूंजीवाद और साम्राज्यवाद को समाप्त करने के लिए प्रेरित किया।
- **वर्ष 1928** में औद्योगिक अशांति बढ़ने के साथ, साम्यवादी प्रभाव में भी वृद्धि हुई और AITUC औपचारिक रूप से **मॉस्को में थर्ड इंटरनेशनल (Third International) और पैन पैसिफिक सेक्रेटेरिएट(Pan Pacific Secretariat)** से संबद्ध हो गया। परिणामस्वरूप भारतीय नरमपंथी इससे पृथक हो गए और इन्होने **ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन फेडरेशन** का गठन किया।
- **लोक सुरक्षा अध्यादेश, ट्रेड डिस्प्यूट ऐक्ट को पारित करना और मेरठ षड़यंत्र मुकदमे जैसे घटनाक्रमों तथा** इससे संबंधित दमनात्मक कार्यवाहियों ने **घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का ध्यान इसकी ओर आकर्षित किया** और नरमपंथी एवं चरमपंथी मजदूर संघो के मध्य एकता को प्रेरित किया।

- **वर्ष 1937 में प्रांतों में स्थापित कांग्रेस मंत्रिमंडलों ने** भारत में मजदूर संघो की गतिविधियों को अधिक बढ़ावा दिया जिससे उनकी संख्या में वृद्धि हुई।
- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, मजदूर संघ राजनीतिक घटनाक्रम के प्रति उदासीन नहीं रह सका। **वामपंथियों के अधीन AITUC के एक भाग ने सरकार समर्थक रुख अपनाया। साथ ही इसने** इंडियन फेडरेशन ऑफ लेबर नामक सरकार समर्थक संघ का गठन किया।

हालांकि, इसके बावजूद राष्ट्रवादी नेता AITUC पर पूर्ण नियंत्रण नहीं रख सके और अंतत: वर्ष **1944 में भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस** का गठन हुआ। राजनीतिक विचारधारा के आधार पर ट्रेड यूनियनवाद का ध्रुवीकरण स्वतंत्रता के पश्चात् भी जारी रहा।

11. Starting from the creation of world's first dock, India's maritime history is simply astonishing. Elucidate. (250 words) 15

विश्व के पहले बंदरगाह के निर्माण से लेकर, भारत का समुद्री इतिहास आश्चर्यजनक है। विशदीकरण कीजिए।

दृष्टिकोण:

- भारत के समुद्री इतिहास के बारे में संक्षेप में लिखिए।
- कालानुक्रम के अनुसार समुद्री इतिहास के प्रमुख पहलुओं को सूचीबद्ध कीजिए।
- उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

भारतीयों ने राजनीतिक कारणों के बजाय व्यापार और वाणिज्य के लिए समुद्री मार्गों का उपयोग किया और सदियों से अन्य देशों के साथ शांतिपूर्ण समुद्री-वाणिज्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान किया। **इस समुद्री विरासत के प्रमुख पहलुओं में शामिल हैं:**

- **हड़प्पा युग (2500-1700 ई.पू.):**
  - मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के उत्खनन में मेसोपोटामिया के साथ समुद्री गतिविधियों और व्यापार संबंधों के पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं।
  - **लोथल में शुष्क गोदी** को विश्व में कहीं भी ऐसी प्रथम सुविधा माना जाता है, जहाँ पोतों के आश्रय और उनकी मरम्मत की सुविधा थी।
- **वैदिक युग (1700-500 ई.पू.):**
  - ऋग्वेद में **वरुण** को समुद्र का स्वामी संदर्भित किया गया है और उन्हें महासागरीय मार्गों, जिनका उपयोग जलयानों द्वारा किया जाता था, का ज्ञाता बताया गया है।
  - इसमें व्यापार और धन की तलाश में समुद्र पार देशों में नौकायन करने वाले व्यापारियों का भी उल्लेख है।
- **नंद और मौर्य साम्राज्य (500 ई.पू.-200 ई.):**
  - विश्व में नौसेना रखने का प्रथम अभिलिखित उदाहरण मगध साम्राज्य में मिलता है। इसके अन्य साम्राज्यों के साथ व्यापक व्यापारिक संबंध थे और सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता था, जिससे कई राष्ट्रों के मध्य परस्पर संबंधों को बढ़ावा मिला।
  - ग्रीक साहित्यिक अभिलेखों में पाटलिपुत्र के प्रशासन में **नौसेना युद्धों** से संबंधित विभिन्न पहलुओं को प्रबंधित करने वाले एक विशेष विभाग की उपस्थिति का वर्णन किया गया है।
  - चाणक्य द्वारा लिखित अर्थशास्त्र में मौर्य साम्राज्य में **जहाज़रानी विभाग,** विभिन्न प्रकार की नौकाओं और महासागरों एवं समुद्रों में नौपरिवहन के लिए उत्तरदायी 'युद्ध कार्यालय' ('War Office') के रूप में गठित एक एडमिरल प्रभाग का उल्लेख किया गया है।
- **सातवाहन और गुप्त वंश (200-500 ई.):**
  - सातवाहनों भारत के पूर्वी तट को नियंत्रित करते थे। उन्होंने पोत की आकृति उत्कीर्णित सिक्के जारी किए और **दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों** में अपनी संस्कृति, भाषा और हिंदू धर्म का प्रसार किया।
  - गुप्त काल में हिंद महासागर के द्वीपों तक समुद्रपारीय वाणिज्य और सांस्कृतिक प्रसार हुआ। **फाहियान के यात्रा-वृत्तान्त** में ज्ञात तारों की स्थिति से मार्गों का पता लगाकर **समुद्री नौसंचालन की उन्नत कला** का उल्लेख किया गया है। इस दौरान कई पत्तनो का निर्माण किया गया, जिसने यूरोपीय और अफ्रीकी देशों के साथ व्यापार संबंधों को पुनर्जीवित किया।

- **दक्षिणी राजवंश:**
    - चेर, चोल और पांड्य शासकों ने सुमात्रा, जावा, मलय प्रायद्वीप, थाईलैंड और चीन के स्थानीय शासकों के साथ सुदृढ़ समुद्री व्यापारिक संबंध स्थापित किए। समुद्री यात्राओं के माध्यम से ही **मानसून का ज्ञान** भी विकसित हुआ।
    - इन्होने अपने व्यापारिक पोतों की सुरक्षा में लगी शक्तिशाली नौसेना की सहायता हेतु तटों पर पोतों की मरम्मत के लिए यार्ड, गोदी और लाइट हाउस निर्मित किए।
    - लगभग 10 वीं शताब्दी ईस्वी में चोलों, तमिल राजाओं और श्री विजय साम्राज्य की नौसेनाओं के मध्य हुई कई समुद्री लड़ाइयों के प्रमाण मिलते हैं, जिसके परिणामस्वरूप ये साम्राज्य कमजोर हो गए और भारत में अरब वर्चस्व और व्यापारियों को स्थापित होने का अवसर प्राप्त हुआ।
    - चेरों ने भारतीय बंदरगाहों टिंडिस और मुजिरिस से अपने पोतों को अरब और ग्रीस के बंदरगाहों तक ले जाने के लिए मानसूनी पवनों के ज्ञान का उपयोग किया।
- **यूरोपीय और मराठा:**
    - कालीकट पर **वास्को डी गामा** के आगमन से हिन्द महासागर में मार्गों पर नियंत्रण के लिए संघर्षों का दौर आरंभ हुआ जिसने इस क्षेत्र में शांतिपूर्ण व्यापार में बाधा उत्पन्न की। इसने डच, ब्रिटिश और फ्रांसीसियों को भारत में प्रवेश करने का मार्ग प्रशस्त किया जिससे अंतत: भारत का उपनिवेशिकरण हुआ।
    - इस समय के भारतीय शासकों में, मराठों ने एक सशक्त नौसेना और बंदरगाहों की कुशल प्रणाली के महत्व को समझा। उन्होने ब्रिटिश और पुर्तगालियों को खाड़ी में रोकने के लिए 500 से अधिक जहाज़ों के बेड़े को तैनात किया था।

इस प्रकार, समृद्ध भारतीय समुद्री परंपराओं के अस्तित्व को स्थापित करने और हिंद महासागर में हमारी वर्तमान उपस्थिति को निर्देशित करने के लिए भारतीय साहित्य, कला, मूर्तियां, पेंटिंग और पुरातत्व से प्राप्त अनेक प्रमाण हैं।

12. Highlighting the unique features of Vesara style, discuss how it symbolizes confluence of Dravidian and Nagara temple architectures. (250 words) 15

वेसर शैली की अद्वितीय विशेषताओं को रेखांकित करते हुए, चर्चा कीजिए कि यह कैसे द्रविड़ और नागर मंदिर स्थापत्य कलाओं के संगम का प्रतीक है।

दृष्टिकोण:

- भारत में वेसर मंदिर स्थापत्य कला का संक्षिप्त परिचय देते हुए उत्तर आरंभ कीजिए।
- मंदिर स्थापत्य कला की वेसर शैली की अद्वितीय विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।
- चर्चा कीजिए कि कैसे यह नागर और द्रविड़ शैलियों की एक संकर शैली है।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

मंदिर स्थापत्य कला की वेसर शैली का विकास बादामी के चालुक्य शासकों के संरक्षण में कर्नाटक क्षेत्र में हुआ। राष्ट्रकूटों द्वारा इस शैली को और परिष्कृत किया गया और होयसल साम्राज्य में यह अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई। इस शैली के कुछ उत्कृष्ट उदाहरण बादामी मंदिर, दुर्गा मंदिर (ऐहोल), विरुपाक्ष मंदिर (पट्टडकल), केशव मंदिर (सोमनाथपुर) हैं।

चूंकि मंदिर स्थापत्य कला की वेसर शैली एक संकर शैली है। इसलिए इस शैली में योजना और अधिरचना के डिज़ाइन में किसी निश्चित नियम का पालन नहीं किया गया। इस शैली से संबंधित डिज़ाइन और स्थापत्य कला के मामले में संपूर्ण क्षेत्र में अत्यधिक विविधता है। यद्यपि इसे संकर मंदिर स्थापत्य कला शैली माना जाता है, जिसमें मंदिर स्थापत्य कला की नागर और द्रविड़ दोनों शैलियों की विशेषताएँ पायी जाती हैं, फिर भी इस शैली की कुछ भिन्न विशेषताएँ निम्नानुसार हैं:

- **अधिरचना की प्रधानता:** वेसर शैली में अधिरचना अपने आविर्भाव, आकार और शिल्पांकन में अत्यंत उत्कृष्ट है।
- **देवालय (पूजा गृह) में प्रवेश कक्ष:** प्रवेश कक्ष इस शैली की विशेष विशिष्टता है क्योंकि वेसर शैली के मंदिरों में दो या दो से अधिक प्रवेश कक्ष हो सकते हैं, जो नागर शैली के मंदिरों में पूजा गृह में प्रवेश के छोटे बंद मंडप और द्रविड़ शैली के विस्तृत, खुले मंडप से भिन्न है।
- **विमान:** नागर और द्रविड़ शैली की तुलना में, वेसर शैली में प्रत्येक मंजिल के साथ विमान की ऊंचाई कम होती जाती है और इसे आधार से शीर्ष तक ऊंचाई के अवरोही क्रम में व्यवस्थित करके बनाया जाता था।
- **भू-योजना:** इस शैली की भू-योजना अत्यधिक जटिल थी क्योंकि यह एक तारे की आकृति में विकसित हुई, जो द्रविड़ और नागर शैलियों के आयताकार/वर्गाकार प्रतिरूप से अलग थी।

- **अलंकरण:** मंदिर की दीवारों और स्तंभों के अलंकरण के मामले में, वेसर शैली के मंदिर अत्यंत आलंकारिक उत्कीर्णनों के साथ मौलिक गुणवत्ता को प्रदर्शित करते हैं।
    - कभी-कभी वेसर अधिरचना में देवी-देवताओं की छोटी-आकर की मूर्तियां उत्कीर्णित की जाती थीं। उदाहरण के लिए, लगभग 1100 ई. में निर्मित नीलगुंडा के भीमेश्वर मंदिर की अत्यधिक सुन्दर अधिरचना है जिस पर विष्णु, शिव, भैरव जैसे देवताओं की आकृतियां अंतराल पर उत्कीर्ण की गई हैं।

ऊंची वेदी: वेसर शैली के मंदिरों को कभी-कभी ऊंची वेदी (मंच) पर निर्मित किया जाता था और उन वेदियों का उपयोग प्रदक्षिणा पथ के रूप में किया जाता था। मंदिर की वेदी को जगती या अधिष्ठान कहा जाता है। सोमनाथपुर में चेन्नाकेशव मंदिर को तीन फीट ऊँची वेदी पर निर्मित किया गया है।

मोर्टार का उपयोग: वेसर स्थापत्य कला में **मोर्टार (चूना, मिट्टी आदि का गारा)** का उपयोग नहीं किया गया था, जिससे मंदिरों के आंतरिक भाग में भी वातायन और प्रकाश की सुविधा होती थी।

उपर्युक्त विशेषताओं के अतिरिक्त, वेसर शैली निम्नलिखित कारणों से द्रविड़ और नागर मंदिर स्थापत्य कलाओं के संगम का प्रतीक है:

- **नागर शैली का प्रभाव**
    - मुख्य देवालय के आसपास छोटे देवालयों का होना।
    - हीरे की आकृति का सीढ़ीनुमा आधार जो धीरे-धीरे तारे के आकार वाली वेदी में विकसित हुआ।
    - मंडप और गर्भगृह के बीच एक गलियारे (vestibule) की उपस्थिति।
    - दीवारें नागर शैली के मंदिर की तरह हैं, जो स्तंभों द्वारा बनाई गई हैं और इन स्तंभों पर विभिन्न आकृतियां उत्कीर्ण की गई हैं।
- **द्रविड़ शैली का प्रभाव:** सपाट छत के साथ स्तंभयुक्त मंडप।
    - **वेसर शिखर या कदंब शिखर:** विमान के शीर्ष पर एक गोलाकर शिखर बनाया जाता था। वेसर मंदिर के शिखर में द्रविड़ शैली के विमान की विशेषताएँ प्रदर्शित होती हैं।
    - **गोपुरम, जलाशय और मिश्रित दीवारें:** वेसर शैली के कुछ मंदिरों में इनकी उपस्थिति और अन्य में अनुपस्थिति, नागर और द्रविड़ दोनों शैलियों के प्रभाव को दर्शाती है।

उपर्युक्त विशेषताओं के कारण ही मंदिर स्थापत्य कला की वेसर शैली को द्रविड़ और नागर मंदिर स्थापत्य कला शैलियों के संगम का प्रतीक माना जाता है।

13. Given its inward-looking approach, the Indian School of philosophies still remain relevant in the 21st century. Analyse. (250 words) 15

भारतीय दार्शनिक संप्रदायों की अंतर्मुखी दृष्टिकोण को देखते हुए, यह अभी भी 21वीं सदी में प्रासंगिक बना हुआ है। विश्लेषण कीजिए।

दृष्टिकोण :

- भारतीय दार्शनिक संप्रदायों की प्रमुख विशेषताओं पर एक संक्षिप्त टिप्पणी के साथ उत्तर प्रारंभ कीजिए।
- भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।
- 21वीं सदी में भारतीय दार्शनिक संप्रदायों के अभी भी प्रासंगिक होने से संबंधित कारणों की व्याख्या कीजिए।
- उपयुक्त निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

भारतीय दार्शनिक संप्रदाय विचार मीमांसा की उन प्रणालियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो **भारतीय उपमहाद्वीप की सभ्यताओं द्वारा विकसित** किए गए थे। इनमे न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व-मीमांसा (या मीमांसा), और वेदांत दर्शन संप्रदाय जैसी वैदिक (आस्तिक) प्रणाली और बौद्ध एवं जैन धर्म जैसी अवैदिक (नास्तिक) प्रणालियां दोनों सम्मिलित हैं। भारतीय दर्शन सामान्यत: शाश्वत और असीम की खोज में मनुष्य को सामाजिक सदगुणों से ऊपर उठाने का प्रयास करता है। इस प्रकार, यह **पश्चिमी दर्शन के बहिर्मुखी दृष्टिकोण के विपरीत है**, जहां मनुष्य का सार उसकी तर्क शक्ति है और मानव समाज एक मुख्य चिंतनीय विषय है।

यद्यपि भारतीय दृष्टिकोण की आलोचना इस आधार पर की जाती है कि यह सार्वभौमिक "आत्मा" पर बल देते हुए व्यक्ति को कम महत्व प्रदान करता है। हालांकि, **भारतीय दार्शनिक संप्रदाय 21वीं सदी में भी प्रासंगिक बने हुए हैं:**

- **कर्म का नियम**: जीवन में कुछ भी आकस्मिक नहीं है, आज हम जो कुछ भी हैं, वह हमारे कर्मों या कार्यों का परिणाम है। कर्म भाग्य नहीं है। कर्म का अर्थ है कि प्रत्येक मनुष्य अपने भविष्य को नियंत्रित करता है। यह भाग्य या महत्वाकांक्षी सोच पर निर्भरता के बजाय कर्म करने को प्रोत्साहित करता है।
- **नैतिक एवं नीतिपरक शिक्षा**: नैतिकता और अनुशासन का अभाव किसी व्यक्ति के दूसरों के साथ संबंधों में मिथ्याबोध उत्पन्न करता है। इस प्रकार, नैतिक और नीतिपरक शिक्षा समकालीन समय में बढ़ती भावनात्मक समस्याओं के कारणों का समाधान करेंगी।
- **व्यावहारिकता**: भारतीय दर्शन की सभी प्रणालियों में एक व्यावहारिक पहलू विद्यमान है जिसे **साधना** कहा जाता है। प्राचीन काल में ऋषियों का मत था कि कोई भी दर्शन जो मनुष्य को जीवन की दिन प्रतिदिन की समस्याओं का समाधान करने में सक्षम नहीं बनाता है, वह व्यर्थ है। इस प्रकार, यह हमें जीवन समस्याओं से निपटने में सहायता करता है।
- **प्रत्यक्ष अनुभव**: भारतीय दार्शनिकों ने ध्यान (meditation) की विभिन्न विधियों की खोज की जो किसी व्यक्ति को **चेतना** के ऐसे उच्चतर स्तर को प्राप्त करने में सहायता करते हैं जिसमें व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से सत्य का अनुभव कर सकता है। भारतीय दर्शन की प्रत्येक प्रणाली यह घोषित करती है कि मनुष्य में एक शाश्वत चेतना है और इस चेतना का बोध ही जीवन का लक्ष्य है।
- **उदार दृष्टिकोण**: प्रत्येक प्रणाली निरंतर सह-अस्तित्व में विद्यमान है तथा अन्य सभी सम्प्रदायों के विचारों के लिए उदार है। किसी वाद-विवाद के दौरान, इनका उद्देश्य **दूसरे के दर्शन को नष्ट करने का नहीं होता है बल्कि अपने स्वयं के सिद्धांतों और विचारों को स्पष्ट करना होता है।** ये **'सर्व धर्म समभाव'** में विश्वास करते हैं जिसका अर्थ है कि सभी धर्मों द्वारा अनुसरण किए जाने वाले मार्गों का लक्ष्य समान है। इस विचारधारा ने विभिन्न संप्रदायों के सद्भावपूर्वक सह-अस्तित्व को संभव बनाया है।

भारत में दर्शन का उद्भव जीवन के रहस्य और मानव जीवन के कष्टों के संदर्भ में ज्ञान प्राप्ति के रूप में हुआ, इस प्रकार भारतीय दर्शन का लक्ष्य मानव जीवन को दुखों से मुक्त करना है। हालांकि, जीवन के समग्र दृष्टिकोण के लिए आधुनिक खोज कठोर आत्मनिर्भर मानवतावाद की प्रवृति तक सीमित है। आत्म-अनुभूति, अपनी आंतरिक प्रकृति का प्रत्यक्ष अनुभव भारतीय दर्शन की सभी प्रणालियों का लक्ष्य है। इस संदर्भ में, भारतीय दर्शन आधुनिक युग के अलगाव और पहचान के संकट का एक समाधान हो सकता है।

14. The roots of Indian classical music date back to ancient India. Elucidate. Also, distinguish between Hindustani and Carnatic music. (250 words) 15

भारतीय शास्त्रीय संगीत की जड़ें प्राचीन भारत में निहित हैं। विशदीकरण कीजिए। साथ ही, हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत में भी अंतर स्पष्ट कीजिए।

दृष्टिकोण :

- प्राचीन काल से भारत में शास्त्रीय संगीत के उद्भव को वर्णित कीजिए।
- हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के मध्य समानताओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
- हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के मध्य अंतर स्पष्ट कीजिए।
- उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

- भारत में **शास्त्रीय संगीत के आरंभिक रूप** की **जड़ें सामवेद में खोजी जा सकती हैं**। सामवेद में गद्यात्मक शैली में संकलित श्लोक और संगीत के विज्ञान के रूप में संदर्भित इसका उपवेद - **गंधर्ववेद,** शामिल है। यह समय के साथ विकसित हुआ जिसे निम्नलिखित के माध्यम से समझा जा सकता है:
- **निष्पादन कलाओं पर** भरत द्वारा रचित **नाट्यशास्त्र** (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईस्वी) जैसे **प्राचीन ग्रंथों में** संगीत पर छह अध्याय शामिल हैं। इसी प्रकार, मतंग द्वारा रचित **बृहद्देशी** (9वीं और 10वीं शताब्दी ईस्वी) में पहली बार रागों का नामकरण और वर्णन किया गया। इसके अतिरिक्त, सारंगदेव द्वारा रचित **संगीत रत्नाकर** में 264 राग सम्मिलित थे। प्राचीन काल में **विभिन्न तार वाद्य और वायु (सुषिर)** वाद्य जैसे बांसुरी, ड्रम, वीणा आदि भी विकसित हुए, जिससे संगीत को प्रोत्साहन मिला।

- **समुद्रगुप्त, धारा नगरी (वर्तमान धार, म.प्र.) के भोज, कल्याण के सोमेश्वर जैसे राजाओं** ने संगीत को संरक्षण प्रदान करने के साथ साथ इसके प्रसार में योगदान दिया।
- मध्य काल में, संगीत सूफी और भक्ति आंदोलनों का एक अभिन्न अंग बन गया। **सूफी और भक्ति संतों ने क्रमशः कव्वाली और भजन को लोकप्रिय बनाया।**
- अंततः, भारतीय शास्त्रीय संगीत दो रूपों अर्थात हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और कर्नाटक संगीत में विभाजित हो गया। इन **शब्दों का प्रथम बार प्रयोग हरिपाल द्वारा रचित संगीत सुधाकर (14वीं शताब्दी ईस्वी) में किया गया था।**

हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत, एक ही समान स्रोत, अर्थात् वेद से उत्पन्न होकर संगीत की दो स्वतंत्र प्रणालियों के रूप में विकसित हुए। दोनों के मध्य विभिन्न **समानताएं** हैं, जैसे:

- दोनों शैलियां **स्वरमाधुर्य** (अर्थात अध्यारोपित होने के बजाय एक संगीतात्मक स्वर के बाद दूसरा स्वर आता है) **को प्रमुख महत्व** देती हैं
- मूल आधार के रूप में दोनों का समान आधार अर्थात स्वर, राग और ताल, है।
- दोनों में **प्रत्येक राग में एक स्वर प्रधान है।**

हालांकि, हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के मध्य कुछ अंतर हैं, जिनमें सम्मिलित हैं:

- हिंदुस्तानी संगीत में दिल्ली के मुगल शासकों के दरबार को सुशोभित करने वाले **फारसी और अरबी संगीतकारों के संगीत की कुछ विशेषताओं को आत्मसात किया गया है** जबकि कर्नाटक संगीत दक्षिण भारत में **अपनी मूल पद्धतियों के साथ विकसित** हुआ था।
- **कर्नाटक संगीत कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल तक ही सीमित रहा** जबकि **देश के शेष भागों के शास्त्रीय संगीत प्रचलित हुआ जिसे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के नाम से जाना जाता है।**
- **कर्नाटक संगीत में गायन की केवल एक विशिष्ट शैली विहित है**, जबकि **हिंदुस्तानी संगीत में कई उप-शैलियाँ या घराने शामिल हैं** जैसे किराना घराना, ग्वालियर घराना आदि।
- कर्नाटक संगीत में **संगीत वादन के समय उसमें परिवर्तन करने (improvise) की कोई स्वतंत्रता नहीं** है किंतु हिंदुस्तानी संगीत में **विविधता लाने और इस प्रकार का परिवर्तन करने की संभावना होती है।**
- हिंदुस्तानी संगीत **राग-आधारित** है जबकि कर्नाटक संगीत **कृति-आधारित** है।
- **हिंदुस्तानी संगीत शुद्ध स्वरों पर बल देता** है जबकि **गमक (gamaka) आधारित कर्नाटक संगीत में रागों** पर बल दिया जाता है।
- राग रचनाओं (आलापों) को हिंदुस्तानी संगीत में स्वर दर स्वर और कर्नाटक संगीत में पद दर पद विस्तारित किया गया है।
- **उपापक्कवाद्यम (upapakkavadyam) की अवधारणा** अर्थात घाटम (ghatam), गंजीरा (ganjira), मोर्सिंग (morsing) आदि का उपयोग **कर्नाटक संगीत** में होता है न कि हिंदुस्तानी संगीत में।
- **सारंगी हिंदुस्तानी संगीत में एक प्रमुख साज है**, जबकि **वायलिन कर्नाटक संगीत का** प्रमुख वाद्ययंत्र है।
- हिंदुस्तानी संगीत में, **स्वरों को अधिक महत्व दिया जाता है**, जबकि कर्नाटक संगीत में **स्वरों और वाद्ययंत्रों दोनों को समान महत्व** दिया जाता है।

दोनों शैलियों से अनेक महान व्यक्तित्व जैसे तानसेन एवं अमीर खुसरो (हिंदुस्तानी संगीत) और त्यागराज, श्यामा शास्त्री एवं एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी (कर्नाटक संगीत) संबंधित हैं और दोनों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को समृद्ध बनाने में अहम योगदान दिया है।

15. The socio-religious reform movements had a deep influence on cultural as well as national consciousness of Indians in the nineteenth century. Analyse. (250 words) 15
उन्नीसवीं शताब्दी में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों का सांस्कृतिक के साथ-साथ भारतीयों की राष्ट्रीय चेतना पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। विश्लेषण कीजिए।

दृष्टिकोण :

- 19वीं शताब्दी के सामाजिक धार्मिक आंदोलनों के बारे में संक्षेप में उल्लेख कीजिए।
- चर्चा कीजिए कि किस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी में आंदोलनों ने भारतीयों की सांस्कृतिक चेतना के साथ-साथ राष्ट्रीय चेतना को प्रभावित किया।
- इनकी सीमाओं का उल्लेख कीजिए।
- उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज धार्मिक अंधविश्वासों और रूढ़ियों से ग्रस्त था। इसलिए सामाजिक सुधारकों का साझा विश्वास यह था कि भारत में सामाजिक और धार्मिक सुधार की आवश्यकता है। इसके परिणामस्वरूप देश के विभिन्न भागों में समाज का पुनरुत्थान करने के उद्देश्य से सुधार आंदोलनों को प्रारंभ किया गया।

उन्नीसवीं शताब्दी में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों ने सांस्कृतिक के साथ-साथ भारतीयों की राष्ट्रीय चेतना को निम्नलिखित रूप में प्रभावित किया:

- सती प्रथा, कन्या शिशुहत्या एवं बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष और विधवा पुर्नविवाह एवं महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करते हुए **महिलाओं की मुक्ति और लैंगिक समानता की मांग करना।**
  - इस संदर्भ में, **राजा राम मोहन राय द्वारा गठित ब्रह्म समाज** ने बाल विवाह, सती प्रथा आदि के विरुद्ध प्रभावी संघर्ष किया।
  - इसी प्रकार, **ईश्वर चंद्र विद्यासागर** ने स्वयं को महिलाओं की मुक्ति हेतु मुख्य रूप से विधवा पुनर्विवाह और बालिकाओं के लिए स्कूलों की स्थापना के संबंध में समर्पित किया।
- जाति भेद और अस्पृश्यता के उन्मूलन के माध्यम से **सामंजस्यपूर्ण और समतावादी समाज को बढ़ावा देना।**
  - **ज्योतिबा फुले** द्वारा स्थापित **सत्यशोधक समाज** का उद्देश्य जाति व्यवस्था को समाप्त करना और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को समाप्त करना था।
  - इसी प्रकार, **श्री नारायण गुरु धर्म परिपालन आंदोलन, जस्टिस मूवमेंट, अरुविप्पुरम आंदोलन** आदि का उद्देश्य निम्न जाति के समूहों का सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से उत्थान करना था।
- **भारतीय राष्ट्रवाद के विकास और राजनीतिक जागरुकता के लिए आधार तैयार करना।** इस संदर्भ में, **गोपाल कृष्ण गोखले** द्वारा **सर्वेन्ट्स ऑफ़ इंडियन सोसायटी** की स्थापना की गयी। इसका उद्देश्य भारत की सेवा के लिए मिशनरियों को प्रशिक्षित करना और निस्वार्थ कार्यकर्ताओं का एक कैडर तैयार करना था जो राष्ट्र के लिए अपने जीवन को समर्पित कर सकते थे।
- **भारतीय समाज की रूढ़िवादी सामाजिक परम्पराओं** और अप्रासंगिक (आउट-डेटेड) रीति-रिवाजों में सुधार करना। इसमें आर्य समाज, अलीगढ़ आंदोलन, रहनुमाई मजदेयासान सभा और सिख सभा आंदोलन जैसे आंदोलन सम्मिलित थे।
- **लोगों को समृद्ध भारतीय सांस्कृतिक विरासत के बारे में जागरूक करना।** इस क्षेत्र में प्रयासों का नेतृत्व **आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन और थियोसोफिकल सोसायटी** द्वारा किया गया था।
- भारतीय जनता के उत्थान के लिए सुधारकों द्वारा **आधुनिक और वैज्ञानिक शिक्षा को बढ़ावा देना।** उन्होंने इस उद्देश्य के लिए कई स्कूल और कॉलेजों की स्थापना की जैसे **दयानंद एंग्लो-वर्नाक्युलर स्कूल, मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज, हिंदू कॉलेज आदि।**

हालांकि, इन सुधार आंदोलनों की कई सीमाएँ भी थीं, जैसे:

- इन सुधारों ने व्यावहारिक रूप से छोटे अल्पसंख्यक समूह अर्थात केवल शिक्षित और शहरी मध्यम वर्गों को प्रभावित किया जबकि विशाल जनसमूह इनसे अछुता रहा। इसके अतिरिक्त, इन आंदोलनों में एकता और सुदृढ़ संगठन के अभाव के साथ-साथ इनकी स्थानीय प्रकृति ने **इनके प्रभाव को सीमित कर दिया।**
- अतीत की महानता और धार्मिक ग्रंथों से प्रमाण देने की सुधारकों की प्रवृत्ति ने **रहस्यवाद को प्रोत्साहित किया और छद्म वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दिया।**
- धर्मनिरपेक्ष पहलुओं की तुलना में संस्कृति के धार्मिक और दार्शनिक पहलुओं पर अधिक बल दिया गया। इसने हिंदुओं से संबंधित प्राचीन भारतीय इतिहास की प्रशंसा की और मुसलमानों ने स्वयं को मध्यकालीन इतिहास तक सीमित कर लिया। इसने समाज में दो पृथक समूहों की भावना को सृजित किया जिसके परिणामस्वरूप **सांप्रदायिक चेतना को बढ़ावा मिला।**
- भारतीय जनमानस की मानसिकता से जाति प्रथा और रूढ़िवादी प्रथाओं को समाप्त करना कठिन था। अतीत की महानता और धार्मिक ग्रंथों से प्रमाण देने की सुधारकों की प्रवृत्ति ने **उच्चतर जाति के हिंदुओं से निम्न जाति के हिंदुओं को पृथक कर दिया।**

इन सीमाओं के बावजूद, सुधार आंदोलन राष्ट्रीय चेतना का विकास करने में एक अभिन्न अंग बन गए। इसके अतिरिक्त, ये आंदोलन औपनिवेशिक सांस्कृतिक और वैचारिक आधिपत्य के विरुद्ध प्रतिरोध को प्रेरित करने में सहायक थे।

16. ***World War I brought in socio-economic dislocation for nearly all sections of the Indian population, paving the way for the necessary social mobilization for an impending mass upsurge. Elaborate.***

(250 words) 15

प्रथम विश्व युद्ध भारतीय जनसंख्या के लगभग सभी वर्गों के लिए सामाजिक-आर्थिक उथल-पुथल लेकर आया, जिससे आसन्न जन उभार के लिए आवश्यक सामाजिक लामबंदी का मार्ग प्रशस्त हुआ। सविस्तार वर्णन कीजिए।

दृष्टिकोण:

- प्रथम विश्व युद्ध और भारत में तत्कालीन स्थिति के बारे में संक्षेप में चर्चा कीजिए।
- प्रथम विश्व युद्ध भारतीय जनसंख्या के लगभग सभी वर्गों के लिए सामाजिक-आर्थिक उथल-पुथल कैसे लेकर आया, रेखांकित कीजिए।
- इसने गाँधीजी के नेतृत्व में जन-लामबंदी का मार्ग कैसे प्रशस्त किया, संक्षेप में वर्णन कीजिए।
- उचित निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

प्रथम विश्व युद्ध के कई स्थायी परिणाम हुए जो केवल यूरोप तक ही सीमित नहीं थे। परिणामस्वरूप, इसने भारत में भी कुछ ताकतों को गति प्रदान की, जिन्होंने ब्रिटेन के युद्ध प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ये ताकतें अंततः भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में रूप में विकसित हुईं। प्रथम विश्व युद्ध का दौर **निम्नलिखित तरीकों से भारतीय जनसंख्या के लगभग सभी वर्गों के लिए सामाजिक-आर्थिक उथल-पुथल लेकर आया:**

- **मुद्रास्फ़ीति:** युद्ध के दौरान रक्षा व्यय में वृद्धि के कारण राष्ट्रीय ऋण में भारी वृद्धि हुई, जिसका अर्थ था व्यापार एवं उद्योग पर **उच्च करारोपण** (चूंकि भूमि राजस्व स्थायी था और इसे तुरंत बढ़ाया नहीं जा सकता था)। बढ़े हुए कराधान का यह बोझ कीमतों में वृद्धि के साथ आम लोगों पर पड़ा।
- **अकाल के समान परिस्थितियां:** युद्ध के दौरान दो बार असाधारण रूप से फसल खराब होने से खाद्य फसलों की पैदावार में काफी कमी आई। घरेलू खपत के लिए खाद्य की कमी के दौरान भी, सेना के भोजन के लिए खाद्य पदार्थों का निर्यात निरंतर जारी रहा। इसके परिणामस्वरूप कई क्षेत्रों में अकाल जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो गईं।
- **सेना में जबरन भर्ती:** इससे ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित आक्रोश निरंतर बढ़ता गया। यह आक्रोश अधिक इसलिए था क्योंकि ग्रामीण समाज के सभी वर्ग पहले से ही युद्ध के आर्थिक प्रभाव से प्रभावित थे।
- **कृषक वर्ग की बेदखली:** जबकि औद्योगिक और आयातित वस्तुओं एवं खाद्य फसलों की कीमतों में वृद्धि हो रही थी, भारत से निर्यात होने वाले कृषि क्षेत्र के कच्चे माल की कीमतों में समान गति से वृद्धि नहीं हुई। परिणामस्वरूप कई विद्यमान भूस्वामी, कृषक भूमि पर मालिकाना हक से बेदखल हो गए और स्वेच्छा से जोतदार (tenants) बन गए।
- **व्यापारियों की शिकायतें:** लघु एवं मध्यम व्यापारियों को युद्धकालीन करों और रुपये एवं पाउंड स्टर्लिंग की विनिमय दरों के उतार-चढ़ाव के विरुद्ध काफी शिकायतें थीं।
- **श्रमिक वर्ग:** युद्ध के समय और युद्ध के बाद के दौर में व्यापारियों को भारी मुनाफ़ा हुआ, लेकिन श्रमिकों की वास्तविक मजदूरी में गिरावट आई। जीवन यापन की बढ़ी हुई लागत के दबाव में श्रमिकों की स्थिति खराब होती चली गई।
- **शिक्षित युवाओं में आक्रोश:** वर्ष 1911 और वर्ष 1921 के बीच, साक्षरता दर एवं साक्षर व्यक्तियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई। शिक्षित युवा बेरोज़गारी का सामना कर रहे थे और साथ ही ब्रिटिश अभिवृत्ति में नस्लवाद के प्रति निरंतर जागरूक हो रहे थे।

इस बढ़ते आक्रोश ने **कई संगठित विरोध-प्रदर्शनों,** जैसे वर्ष 1918 में संयुक्त प्रांत में *किसान सभा आंदोलन* तथा *होमरूल लीग* के रूप में लामबंदी **को अभिव्यक्ति प्रदान की।** इस सामाजिक-आर्थिक परिवेश ने गाँधीजी को भारतीय राष्ट्रवाद के निर्विवाद नेता के रूप में उभरने के लिए एक अनुकूल भूमिका का सृजन किया।

- युद्ध के उपरांत उत्पन्न परिस्थितियों के कारण पश्चिम के प्रति युवाओं का मोहभंग हो गया। व्यथित जनसंख्या ने **गाँधीजी के नवीन विचारों को स्थान दिया।**
- अत्यधिक कराधान और कीमत वृद्धि के बोझ तले दबी जनता खुद को लामबंद करने और **विरोध के किसी भी आंदोलन में भाग लेने के लिए** तैयार थी।
- युद्ध के कष्टों ने ब्रिटिश शासन के न्यायपूर्ण होने और लोगों के कल्याण की ओर केंद्रित शासन होने के मिथक को भी तोड़ दिया।

- युद्ध के प्रयासों में भारतीयों का योगदान बहुत बड़ा था, इसलिए ब्रिटिश सरकार से लाभ प्राप्त होने की अधिक उम्मीदें थीं। किंतु युद्ध के उपरांत कोई लाभ मिलने के बजाय कठिनाइयाँ प्राप्त होने से देश का माहौल और भी आवेशपूर्ण हो गया।

इसके साथ ही गाँधीजी के विचारों की जड़ें मूल भारतीय सभ्यता में निहित होने जैसे कारकों ने इन्हें जनता के लिए और अधिक भरोसेमंद बना दिया। गाँधीजी के विचारों ने भारतीय बहुलवाद का भी ध्यान रखा और किसी भी समुदाय या वर्ग को पृथक नहीं किया। इससे भविष्य में एक व्यापक जन उभार के लिए आवश्यक सामाजिक लामबंदी का मार्ग प्रशस्त हुआ।

17. The end of the Civil Disobedience Movement resulted in serious dissension within the Congress, in the same way as it had happened after the withdrawal of the Non-Cooperation movement. Comment. (250 words) 15

सविनय अवज्ञा आंदोलन की समाप्ति के परिणामस्वरूप कांग्रेस के भीतर वैसा ही गंभीर असंतोष उत्पन्न हुआ, जैसा असहयोग आंदोलन को वापस लेने के पश्चात् उत्पन्न हुआ था। टिप्पणी कीजिए।

दृष्टिकोण:

- असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन के उद्देश्यों पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।
- इन दोनों आंदोलनों के परिणामों की समानता को रेखांकित करने के लिए आंदोलन वापस लेने के पश्चात् के उत्पन्न परिदृश्य पर प्रकाश डालिए।
- तदनुसार निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

राष्ट्रवादियों ने ब्रिटिश सरकार के कुशासन के विरुद्ध **असहयोग आंदोलन (1920-22)** और बाद में पूर्ण स्वतंत्रता की मांग के साथ **सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34)** को आरंभ किया और इन आंदोलनों को देश भर के लोगों का समर्थन प्राप्त हुआ। हालांकि, बाद में अपने घोषित उद्देश्यों को प्राप्त किए बिना ही इन आंदोलनों को वापस ले लिया गया। इन आंदोलनों के समाप्त होने पर, ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लड़ाई जारी रखने की रणनीति पर कांग्रेस के सदस्यों का आपस में मतभेद हो गया, जिसकी चर्चा निम्नानुसार है:

असहयोग आंदोलन के पश्चात् मतभेद:

- **चौरी-चौरा की घटना** (4 फरवरी, 1922) ने गाँधीजी को **असहयोग आंदोलन वापस लेने** की घोषणा करने के लिए प्रेरित किया, जिसकी सी. आर. दास, मोतीलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस सहित कई लोगों ने आलोचना की। इसके अतिरिक्त, सरकार के विरुद्ध वैमनस्य फैलाने के लिए उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। परिणामस्वरूप, राष्ट्रवादी खेमों में विघटन और अव्यवस्था का प्रसार हुआ। इसके अतिरिक्त, तत्काल की जाने वाली कार्रवाइयों को लेकर भी उनमें मतभेद थे।
  - सी. आर. दास, मोतीलाल नेहरू और अजमल खान के नेतृत्व में एक गुट, जिसे **'परिवर्तनकारी (Pro Changers)'** के रूप में भी जाना जाता है, **विधान परिषदों के बहिष्कार को समाप्त करना चाहता था। यह गुट विधान परिषदों की कमजोरियों को उजागर करने और राजनीतिक संघर्ष के लिए उनका उपयोग करने के लिए परिषदों में प्रवेश करने का पक्षधर था।**
  - दूसरी ओर, **'गैर-परिवर्तनकारियों (No-Changers)'** जिनमें वल्लभभाई पटेल, राजेंद्र प्रसाद आदि शामिल थे, के गुट ने **बहिष्कार और असहयोग को जारी रखने की वकालत की, परिषदों में प्रवेश का विरोध किया और रचनात्मक कार्यों पर बल दिया।**

सविनय अवज्ञा आंदोलन के पश्चात् मतभेद:

- दोबारा, **वर्ष 1934 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के खत्म होने पर** कांग्रेस में व्यक्तिगत संघर्ष चरण (1934-35) के दौरान अपनाई जाने वाली रणनीति को लेकर पुनः मतभेद हो गया।
  - गाँधीजी सक्रिय राजनीति से अस्थायी रूप से अलग हो गए, लेकिन कांग्रेस के एक वर्ग ने **गाँधीवादी तर्ज पर रचनात्मक कार्यों पर ध्यान केंद्रित रखने की वकालत की**, जिसने जनशक्ति को समेकित करने और लाखों लोगों को एकजुट करने तथा उन्हें जन आंदोलन के अगले चरण के लिए तैयार करने का मार्ग प्रशस्त किया।

- कांग्रेस के एक अन्य गुट, जिसमें एम. ए. अंसारी, भूलाभाई देसाई, आसिफ़ अली आदि शामिल थे, ने **संघर्ष की संवैधानिक पद्धति को पुन: अपनाने तथा वर्ष 1934 में होने वाले केंद्रीय विधान सभा चुनावों में भागीदारी** की वकालत की। उन्होंने तर्क दिया कि राजनीतिक उदासीनता और शक्तिहीनता के दौर में, जब कांग्रेस एक बड़े पैमाने पर जन आंदोलन को बनाए रखने की स्थिति में नहीं है, **लोगों के राजनीतिक हित और मनोबल को बनाए रखने के लिए** चुनावों का लाभ उठाना और विधान परिषदों में कार्य करना आवश्यक है।
- कांग्रेस के भीतर नेहरू के नेतृत्व वाले वामपंथी समूह ने इनमें से किसी भी गुट का समर्थन नहीं किया। वे **रचनात्मक कार्य और परिषदों, दोनों में प्रवेश के आलोचक** थे क्योंकि उनका मानना था कि इससे जन-आधारित राजनीतिक कार्रवाई अलग-थलग हो जाएगी और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष के मुख्य मुद्दों से जनता का ध्यान भटक जाएगा। इसके बजाय, उन्होंने **गैर-संवैधानिक जन संघर्ष को पुनः आरंभ करने और जारी रखने का समर्थन किया** क्योंकि जारी आर्थिक संकट और संघर्ष के लिए जनता की तैयारी के कारण क्रांतिकारी परिस्थिति अभी भी विद्यमान थी। गाँधीजी की संघर्ष-युद्धविराम-संघर्ष (S-T-S) की रणनीति के विपरीत नेहरू ने संघर्ष-विजय (S-V) की रणनीति की वकालत की।

इन गुटों, विशेष रूप से वामपंथियों और परिषद में प्रवेश के समर्थकों के बीच मतभेद निरंतर बढ़ते गए, जिससे पार्टी के भीतर विभाजन का खतरा उत्पन्न हो गया। हालाँकि, बाद में गाँधीजी के हस्तक्षेप से मतभेदों को सुलझा लिया गया और पार्टी के भीतर विभाजन होने से रोक दिया गया।

18. The Indian Press not only fought severe censorship imposed during the colonial rule but also played a critical role in India's struggle for independence. Discuss. (250 words) 15
भारतीय प्रेस ने न केवल औपनिवेशिक शासन के दौरान आरोपित कठोर सेंसरशिप का मुकाबला किया बल्कि भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चर्चा कीजिए।

दृष्टिकोण:

- प्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका के विषय में बताते हुए तथा अंग्रेजों द्वारा आरोपित किये गए विभिन्न प्रतिबंधों पर लघु टिप्पणी के साथ उत्तर आरंभ कीजिए।
- प्रेस ने सेंसरशिप का मुकाबला कैसे किया? प्रकाश डालिए।
- स्वतंत्रता संघर्ष में प्रेस द्वारा निभाई गई भूमिका को रेखांकित कीजिए।
- संक्षिप्त निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर :

भारत में पहला समाचार-पत्र, *'द बंगाल गजट'* **वर्ष 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिक्की** द्वारा प्रकाशित किया गया था। इसके प्रकाशन के दो साल के भीतर ही, सरकारी नीतियों के विरुद्ध लिखने के कारण इसे प्रतिबंधित कर दिया गया था। इस प्रकार, भारतीय प्रेस अपने आरंभ से ही ब्रिटिश शासन की आलोचना में संलग्न रही थी। इसने राष्ट्रवादी विचारधारा के निर्माण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ब्रिटिश सरकार प्रारंभ से ही प्रेस की भूमिका को लेकर आशंकित थी परिणामतः इसने प्रेस पर कठोर प्रतिबंध आरोपित किए, जैसे कि:

- **समाचार-पत्रों का पत्रेक्षण अधिनियम, 1799 (Censorship Press Act, 1799),** यह प्रायः युद्ध के दौरान प्रेस पर प्रतिबंध आरोपित किया जाता था जिसमें पूर्व-पत्रेक्षण (प्री-सेंसरशिप) भी सम्मिलित था।
- **अनुज्ञप्ति नियम, 1823 (Licensing Regulations, 1823)** के अंतर्गत अनुज्ञप्ति (लाइसेंस) के बिना प्रेस स्थापित करना या उसका उपयोग करना दंडनीय अपराध बना दिया गया था।
- **देशी भाषा समाचार-पत्र अधिनियम, 1878 (Vernacular Press Act-VPA) या मुंह बंद करने वाला अधिनियम (Gagging Act):** लॉर्ड लिटन द्वारा प्रस्तावित, इस अधिनियम का उद्देश्य द्वितीय आंग्ल-अफगान युद्ध (1878-80) के दौरान भारतीय भाषाओँ के समाचार पत्रों को ब्रिटिश नीतियों की आलोचना करने से रोकना था। यह अधिनियम अंग्रेजी भाषा के प्रकाशनों पर लागू नहीं होता था। इसमें दंडाधिकारी (मजिस्ट्रेट) के निर्णय को अंतिम माना गया, जिसे किसी न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती थी।

- **भारतीय समाचार-पत्र (संकटकालीन स्थितियां) अधिनियम, 1931 {Indian Press (Emergency Powers) Act, 1931}:** इस अधिनियम ने प्रांतीय सरकारों को सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रचार को दबाने के लिए व्यापक शक्तियां दे दीं।

इन प्रतिबंधों के बावजूद, नागरिक स्वाधीनता के साथ प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा राष्ट्रवादी एजेंडे में उच्च वरीयता पर थी। प्रेस ने सेंसरशिप का मुकाबला निम्नलिखित तरीके से किया:

- उन्होंने अंग्रेजों द्वारा लगाए गए **कानूनी प्रतिबंधों का मुकाबला करने के लिए रणनीतिक उपाय** किए। उदाहरण के लिए, वे सरकार विरोधी लेख सरकार के प्रति निष्ठा भावना दिखाते हुए लिखते थे।
- VPA के तहत आरोपित किए गए प्रतिबंधों से संरक्षण और सरकारी नीतियों की आलोचना जारी रखने के लिए **अमृता बाजार पत्रिका रातों रात एक अंग्रेजी समाचार-पत्र में परिवर्तित हो गई।**
- राष्ट्रवादी विचारधारा वाले पत्रकारों ने प्रतिबंधों का कड़ा विरोध किया और यहां तक कि इसके कारण वे जेल भी गए। उदाहरण के लिए, **बाल गंगाधर तिलक पर राजद्रोह के आरोप में तीन बार मुकदमा चलाया गया था।**

स्वतंत्रता संघर्ष में भूमिका

- प्रेस मुख्य **राजनीतिक कार्यों, प्रचार, शिक्षण के लिए** मुख्य साधन थी। साथ ही इसने राष्ट्रवादी जनमत को जागृत, संगठित एवं सुदृढ़ करने हेतु राष्ट्रवादी विचारधारा के निर्माण और प्रचार-प्रसार में भी मुख्य भूमिका निभाई।
- इन्होंने भारत में **पुस्तकालय अभियान को प्रोत्साहित करने में** एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसने न केवल राजनीतिक शिक्षण के उद्देश्य को पूरा किया बल्कि संघर्ष के प्रारंभिक चरण में राजनीतिक भागीदारी भी सुनिश्चित की।
- इसने **सरकार के कृत्यों और नीतियों को आलोचनात्मक परीक्षण** के दायरे में रखा और सरकार की एक विरोधी संस्था के रूप में कार्य किया।
- **तिलक, लाला लाजपत राय, गांधीजी** जैसे स्वतंत्रता आंदोलन के कई बड़े नेताओं ने **स्वयं को पत्रकार के रूप में रूपांतरित कर लिया और** अपने विचारों को जनता तक पहुंचाने के लिए प्रेस का उपयोग किया।
- कांग्रेस ने भी अपने सम्मेलन स्थलों तथा उनके द्वारा पारित प्रस्तावों के विषय में लोगों को सूचित और एकत्रित करने के लिए प्रेस का उपयोग किया।

भारत में एक भी प्रांत ऐसा नहीं था, जिसने स्वतंत्रता संघर्ष के कारणों को बरकरार रखने के लिए किसी पत्रिका का प्रकाशन नहीं किया। हालांकि, प्रेस का विकास औपनिवेशिक बाधाओं और दमन से भरा हुआ था, किंतु इसने स्वतंत्रता की अवधारणा का प्रसार किया और स्वतंत्रता संग्राम का एक प्रमुख साधन बन गई।

19. The activities of extremists and the Home Rule Movement is believed to have set the stage for a new era of freedom struggle under the leadership of Gandhiji. Comment. (250 words) 15
माना जाता है कि गरमपंथियों की गतिविधियों और होमरूल आंदोलन ने गांधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संघर्ष के एक नए युग के लिए मंच तैयार किया। टिप्पणी कीजिए।

दृष्टिकोण:

- गरमपंथियों के उदय और होमरूल आंदोलन की पृष्ठभूमि पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए ।
- गांधीजी के नेतृत्व में गरमपंथियों की गतिविधियों ने किस प्रकार स्वतंत्रता संग्राम के एक नए युग के लिए मंच तैयार कर दिया? स्पष्ट कीजिए।
- गाँधीवादी चरण के लिए एक मंच तैयार करने में होमरूल आंदोलन के योगदान की चर्चा कीजिए।
- उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

वर्ष 1909-1915 की अवधि राष्ट्रीय आंदोलन के ब्रिटिश दमन की साक्षी थी। इस दमन से **कांग्रेस दिशाहीन हो गई और जन आंदोलन ने दिशा खो दी थी।** इन परिस्थितियों में, यह गरमपंथियों और होमरूल आंदोलन की गतिविधियाँ थी, जिन्होंने जनता को एक सकारात्मक मार्ग दिखाया और उन्हें अलग-थलग पड़ने से भी रोका। उन्होंने **जनता की मानसिकता को परिवर्तित किया और नई धारणा को स्थापित किया,** जिन्होंने गांधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम के एक नए युग के लिए मंच भी तैयार किया:

गरमपंथियों का योगदान:

- उन्होंने **संघर्ष के लिए जनसमूह तैयार किया।** वे पहले थे जिन्होंने जनता के प्रति अपने विश्वास पर भरोसा किया। **स्वदेशी और बहिष्कार के साथ निष्क्रिय प्रतिरोध के लिए उनके आह्वान ने भारतीय जनता** को **संघर्ष करने की क्षमता के संबंध में एक अवधारणा दी।**
    - इसके अलावा, आंदोलन के उग्र चरण में **जन सभाओं और जुलूसों** का जन-लामबंदी के प्रमुख तरीकों के रूप में उदय हुआ।
    - इन्होंने **समाज के विभिन्न वर्गों** जैसे कि छात्रों, महिलाओं, मुसलमानों के कुछ वर्गों, मजदूर संघों आदि **को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल किया।**
- **भारत की स्वतंत्रता की अवधारणा को गरमपंथियों ने भारत की राजनीति में केंद्रीय स्थान दिया।** वे **स्वराज** की जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में मांग करने वाले **पहले व्यक्ति थे।**
    - स्वदेश बांधव समिति जैसी समितियों ने अपने व्याख्यान, स्वदेशी गीतों आदि के माध्यम से **जनता के मध्य राजनीतिक चेतना** पैदा की।
- उन्होंने अतीत के महान नायकों जैसे-शिवाजी महाराज, रानी लक्ष्मीबाई आदि का उपयोग करके लोगों में **देशभक्ति जगाई** और साथ ही साथ **किसी भी विदेशी वस्तु के बहिष्कार को भी बढ़ावा दिया।**
    - **आत्मनिर्भरता या आत्म शक्ति**' को प्रोत्साहित किया गया। इससे राष्ट्रीय गरिमा, सम्मान और आत्मविश्वास की पुनः पुष्टि हुई तथा गाँवों के सामाजिक और आर्थिक उत्थान को पुन: बल मिला।
    - **स्वदेशी भावना** की अभिव्यक्ति स्वदेशी वस्त्र मिलों, साबुन और माचिस के कारख़ानों, बैंकों आदि की स्थापना के रूप में हुई।
    - इसके अतिरिक्त, इस अवधि के दौरान स्थापित विभिन्न राष्ट्रीय शिक्षण संस्थानों ने **युवा पीढ़ी में स्वतंत्रता की अवधारणा** को स्थापित करने में सहायता की जिसने गाँधीवादी चरण के दौरान संघर्ष में मदद की।

होमरूल आंदोलन का योगदान:

- होमरूल आंदोलन ने पूर्ववर्ती आंदोलनों द्वारा निर्मित **उस गति को बनाए रखने में सहायता की**, जो कि पहले नरमपंथ-गरमपंथ विभाजन, मॉर्ले-मिंटो सुधारों के कारण नरमपंथियों का मोहभंग होने आदि के कारण दम तोड़ रही थी।
- इसने उस **जनमानस की शक्ति को दिशा प्रदान की**, जो उच्च कराधान और महँगाई से उत्पन्न युद्धकालीन कष्टों का बोझ झेल रहे थे और इसका विरोध करने के लिए किसी भी उग्र आंदोलन में भाग लेने को तैयार थे।
- इसने **होमरूल के संदेश को** स्वशासन के रूप में आम आदमी तक पहुँचाया। इसने **पूर्व लामबंदी की तुलना में अधिक व्यापक रूप से लोगों को आकर्षित किया** और राजनीतिक रूप से तत्कालीन पिछड़े क्षेत्रों को भी सम्मिलित किया।
- इसने **शहर और गांव के बीच एक संगठनात्मक संबंध बनाया**, जो बाद के वर्षों में राष्ट्रीय आंदोलन के वास्तविक अर्थों में जनसामुदायिक चरण में प्रवेश करने पर महत्वपूर्ण साबित हुआ ।
- इसने ऐसे **उत्साही राष्ट्रवादियों की एक पीढ़ी** तैयार की जो आने वाले वर्षों में स्वतंत्रता के एजेंडे को आगे ले जाने के लिए तत्पर थे।

इन दोनों आंदोलनों ने, लोगों को नींद से जगाया और अब उन्होंने **साहसिक राजनीतिक पदों को लेना और राजनीतिक कार्यों के नए रूपों में भाग लेना सीखा।** गाँधीवादी चरण के दौरान भावी संघर्ष इन आंदोलनों के माध्यम से प्राप्त अनुभवों से बहुत अधिक प्रभावित हुआ। इन्होंने भविष्य के बड़े संघर्षों के लिए एक मंच तैयार किया। स्वदेशी और विदेशी वस्तुओं, संस्थानों आदि के बहिष्कार की धारणा का उपयोग गाँधीवादी चरण में भी किया गया था। गांधीजी ने होमरूल लीग और गरमपंथियों द्वारा बनाए गए कैडर (cadre) का उपयोग मार्च 1919 में रॉलट एक्ट के विरूद्ध और असहयोग आंदोलन के दौरान, देशव्यापी सत्याग्रह को आगे बढ़ाने में किया।

20. Highlighting the circumstances that favoured its growth, throw light on the development of Leftist movements in India. (250 words) 15

वामपंथी आंदोलन के उद्भव में सहायक परिस्थितियों को रेखांकित करते हुए, भारत में इसके विकास पर प्रकाश डालिए।

दृष्टिकोण:

- भारत में वामपंथी विचारधारा के उद्भव पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
- भारत में वामपंथी विचारधाराओं के विकास में सहायक परिस्थितियों की चर्चा कीजिए।
- भारत में वामपंथी आंदोलनों की दो मुख्य धाराओं अर्थात् CPI और CSP के माध्यम से वामपंथी आंदोलन के उद्भव पर चर्चा कीजिए।
- भारत में वामपंथी आंदोलनों के अन्य मोर्चों के विषय में बताते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर:

भारत में वामपंथ का उद्भव प्रथम विश्व युद्ध के अंत के दौरान विद्यमान **विशेष राजनीतिक-आर्थिक परिस्थितियों** से हुआ था और यह भारत में मुख्यधारा के राष्ट्रवादी आंदोलनों से जुड़ा हुआ था। वे **परिस्थितियां जिन्होंने भारत में वामपंथी आंदोलन के उद्भव में सहायता की थी :**

- प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् **वित्तीय बोझ, दैनिक जीवन की वस्तुओं की बढ़ती कीमतें, अकाल और षड्यंत्रात्मक मुनाफाखोरी,** ने साम्राज्यवादी-पूंजीवादी शक्तियों की बुराइयों को उजागर कर दिया था।
- **USSR में एक नए शासन की महिमा के साथ जुड़े मार्क्स के क्रांतिकारी विचारों ने** भारतीय बुद्धिजीवियों और राजनीतिक नेताओं की कल्पना को हवा दे दी और उन्हें एक नई विचारधारा, जो जनसमूह को संगठित कर सकती थी, से अवगत कराया।
- गाँधीजी ने राष्ट्रवादी संदेश को जन-जन तक पहुँचाने और **मज़दूरों और किसानों को मुख्य धारा में लाने** पर बल दिया और इसके लिए भारत में एक संगठित और वैचारिक रूप से प्रेरित समाजवादी आंदोलन हेतु एक उर्वर ज़मीनी आधार प्रदान किया।
- **शिक्षितों में व्याप्त बेरोज़गारी** ने परिवर्तनशील युवा वर्ग को उग्रवादी/क्रांतिकारी समाजवादी विचारधारा की ओर आकर्षित किया।

भारत में वामपंथी आंदोलन दो मुख्य धाराओं- **कम्युनिस्ट पार्टी और कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (CSP) के माध्यम से विकसित हुआ**। कम्युनिस्ट पार्टी अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की एक शाखा के रूप में कार्य करती थी और बड़े पैमाने पर कॉमिन्टर्न (अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट संगठन के सदस्य) द्वारा नियंत्रित की जाती थी, जबकि CSP वास्तव में कांग्रेस के भीतर ही एक गुट था, जो कि गाँधीवाद के रहस्यवाद और कम्युनिस्टों की कट्टरता के विरुद्ध एक **'तार्किक विद्रोह'** के रूप में उभरा था।

कम्युनिस्ट पार्टी के तहत वामपंथी आंदोलन के विकास को विभिन्न चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

- **प्रथम चरण:** पहले चरण के दौरान, तीन षड्यंत्र मुक़द्दमों अर्थात् पेशावर (1922-23), कानपुर (1924) और मेरठ षडयंत्र मुक़द्दमा (1929-33) और ब्रिटिश विरोधी रुख ने भारतीय कम्युनिस्टों को राष्ट्रवादियों की सहानुभूति हासिल करने में सहायता की।
- **द्वितीय चरण:** वर्ष 1934 में CPI को अवैध घोषित किए जाने के बाद, CPI ने राजनीतिक जंगल में प्रवेश किया और जल्द ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) के भीतर न केवल विदेशी साम्राज्यवाद के खिलाफ बल्कि भारतीय शोषकों के विरुद्ध भी दक्षिणपंथी और वामपंथी गुट पर हमला करना शुरू कर दिया। हालांकि, इस कदम ने उन्हें राजनीतिक मुख्यधारा से और दूर कर दिया।
- **तृतीय चरण:** इस चरण के दौरान, कम्युनिस्टों ने कांग्रेस के भीतर वामपंथ को मजबूत करने के लिए INC के सुगठित पार्टी संगठन का उपयोग करने का निर्णय लिया, अर्थात् CSP कम्युनिस्टों को राजनीतिक संगरोध (quarantine) से वापस ले आई।
- **अंतिम चरण:** उन्होंने ब्रिटिश समर्थक रुख अपनाया और वर्ष 1942 में CPI ने ने एक प्रस्ताव अपनाया, जिसमें भारत को एक बहुराष्ट्रीय राज्य घोषित करना और 16 भारतीय राष्ट्रों की पहचान करना शामिल था। इस योजना को उन्होंने 1946 में कैबिनेट मिशन योजना के सामने रखा। हालाँकि, इस समय तक CPI पूरी तरह से अव्यवस्थित थी और भारतीय राजनीति में उसने अपना स्थान खो दिया था।

इसी प्रकार, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के तहत वामपंथी आंदोलन के उद्भव का पता लगाया जा सकता है:

- वर्ष 1934 में, संविधान और 15-सूत्री कार्यक्रम के साथ कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन किया गया था। इसकी **कांग्रेस की एक प्रतिद्वंद्वी पार्टी के रूप में नहीं** बल्कि एक ऐसी पार्टी के रूप में संकल्पना की गई थी जो कांग्रेस के भीतर कार्य करेगी और उसे सुदृढ़ करेगी।
- इसने भारत सरकार अधिनियम 1935 की **निंदा** की और वर्ष 1937 में कांग्रेस के प्रांतों में सरकार बनाने की स्वीकृति की आलोचना की। वे युद्ध के प्रयास में अंग्रेजों को सशर्त सहायता देने के मुद्दे पर भी **असहमत** थे और अंग्रेजों को बाहर निकालने के लिए एक क्रांतिकारी जन संघर्ष छेड़ना चाहते थे। उन्होंने वर्ष 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में अग्रणी रूप से हिस्सा लिया।
- आर्थिक मुद्दों पर हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्ष में, उन्होंने विभाजन को कांग्रेस द्वारा आत्मसमर्पण की कार्रवाई बताया।

कम्युनिस्ट पार्टी और कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (CSP) के अतिरिक्त,भारत में वामपंथियों के अन्य लघु मोर्चे भी थे। इनमें **सुभाष चंद्र बोस द्वारा गठित फारवर्ड ब्लॉक तथा क्रांतिकारी समाजवादी दल** सबसे प्रमुख थे। अन्य छोटे दल भी थे , जैसे कि भारत का बोल्शेविक दल, क्रांतिकारी साम्यवादी दल आदि।

FOR LATEST NOTES UPDATES
AND FREE PDF DOWNLOADS
JOIN OUR TELEGRAM CHANNEL

IMAGERUNNERS
ON TELEGRAM

FOR COURIER ENQUIRY
& HARD COPIES CALL
IMAGERUNNERS
AT
56 OLD RAJINDER NAGAR 011-45036293
57 OLD RAJINDER NAGAR 011-40204330
60 OLD RAJINDER NAGAR 011-47032507
63/1,SHOP N0.2 & 3 KAROL BAGH METRO STATION GATE NO 7
011-40393124,011-47082116
Mob. 9821697670,9821697672,8800803100,8860450330,
8595697100,8595696880,9910923124,9540538042,
9610064520,9310070560

VISIT OUR WEBSITE WWW.IMAGERUNNERS.IN
ALL INDIA COURIER FACILITY